ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जून 2014

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

वैदिक सत्संग मंडल झज्जर द्वारा आयोजित बृहद् यज्ञ में सम्मानितों की झलकियां

उपरोक्त कार्यक्रम में उपस्थित नगर पार्षद श्रीमती बबली व उर्मिला रंगा को सम्मानित करते स्वामी धर्ममुनि जी व अन्य।

मेधावी छात्राओं को सम्मानित करते स्वामी धर्ममुनि जी व अन्य गणमान्य अतिथिगण।

ओ३म्

ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आगामी आश्रम स्थापना दिवस समारोह का निमन्त्रण

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ द्वारा संचालित अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रूख नगर, गुड़गांव का 7वां स्थापना दिवस 8, 9, 10 अगस्त 2014 शुक्र, शनि और रविवार को बड़े उत्साह के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर बृहद्यज्ञ, योग साधना शिविर एवं विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। आप सादर आमन्त्रित हैं।

❑❑❑

राष्ट्र धर्म और मानवता के सबल रक्षक यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 48वां स्थापना दिवस 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2014 तक योग साधना शिविर एवं विभिन्न सम्मेलनों के साथ श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजित किया जायेगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

प्रिय बन्धुओं! मास जून में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जुलाई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

जयेष्ठ-आषाढ़ सम्वत् 2071 जून 2014

सृष्टि सं. 1972949114 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-13) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-6

(वर्ष 44 अंक 6)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाताः **गजानन्द आर्य**

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः **चन्द्रभान चौधरी**

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : **आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़**

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	6
सम्पादकीय : बोधपूर्वक स्वप्न-निद्रा में प्रवेश से	7
जीवन-यात्रा के चार पड़ाव	9
पेन्ट-बुशर्टधारी साधुःचन्द्रभान चौधरी	10
वेद और योगेश्वर महर्षि दयानन्द	11
उपनयन संस्कार क्यों करायें?	13
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	15
कृमि रोग लक्षण व निदान	17
वेद में नारी का अधिकार	20
सुखी जीवन बनायें, सूत्र अपनायें	21
कल्पना के प्रदेश में खत्म हो पर्दा प्रथा	23
हंसो और हंसाओ	24
अनमोल मोती	24
विचारों के बिना मानवता का अर्थ नहीं:दुग्धाहारी	25
मूल्यवान क्या है?	25
चक्रव्यूह	26
कभी भी पराधीन नहीं रहा है भारत	29
दान सूची	32

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

यज्ञ मनुष्य के स्वर्ग की नौका

यज्ञ स्वर्ग की नौका है। यज्ञ व शुभकर्म करने वाला स्वर्ग को प्राप्त होता है। यह बात आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने रविवार की शाम झज्जर में आयोजित यज्ञ प्रवचन के दौरान कही। इस कार्यक्रम का आयोजन वैदिक सत्संग मंडल द्वारा मोहल्ला कानूगों में किया गया। यज्ञ ब्रह्मा आनन्द देव शास्त्री व यजमान रंजन मास्टर व अलका रहे। कार्यक्रम का संयोजन पंडित रमेश चंद्र कौशिक ने किया। स्वामी ने कहा कि आमतौर पर कहा कि वर्तमान युग में मर्यादाएं भंग होने लगी हैं। उन्होंने कहा कि लोग यह मानते हैं कि देश में उन्नति हुई है। परन्तु स्थिति यह है कि पहले पिता से पुत्र डरता है, पहले अध्यापक से विद्यार्थी डरता था और अब विद्यार्थी से अध्यापक डरता है। ऐसे में उन्नति किसे कहा जा सकता है। स्वामी धर्ममुनि ने कहा कि हमें मर्यादाओं का पालन करते हुए देश को उन्नति की ओर ले जाने की आवश्यकता है। उन्होंने वैदिक सत्संग मंडल द्वारा जारी बेटी बचाओ अभियान

की सरहाना करते हुए महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों पर भी विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम में रिटायर्ड प्रिंसिपल आजाद सिंह दूहन, दिल्ली में डीईओ राजकुमार आचार्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में क्षेत्र की प्रतिभाशाली बालिकाओं के अलावा के.एस.एम. स्कूल की प्रिंसिपल विनीता सरदाना, पार्षद, उर्मिला रंगा, बदलो सहित अन्य महिलाओं को भी सम्मानित किया। इस मौके पर पंडित जयभगवान, राव रतीराम, सुभाष आर्य, राजन, लक्ष्य सहित बड़ी संख्या में नगरवासी उपस्थित रहे।

विवाह पर आजीवन सदस्य बने

कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट बहादुरगढ़ की भांजी कुमारी शिल्पा सुपुत्री श्री अशोक सेठी एवं श्रीमती कैलाश सेठी लक्ष्मी गार्डन गुड़गांव का शुभविवाह प्रिय सुरेन्द्र खन्ना सुपुत्र स्व. श्री जी.आर खन्ना एवं स्व. श्रीमती सोजी बाई ज्योति पार्क गुड़गांव के साथ 25 अप्रैल 2014 को वैदिक से सम्पन्न हुआ। आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के आजीवन सदस्य बने। हम इनके सुखद जीवन की मंगल कामना करते हैं।

गृहस्थ के लिए महामन्त्र

योगी बनो पर रोगी नहीं। स्वस्थ बनो पर मोटे नहीं। बलवान बनो पर दुष्ट नहीं। खरे बनो पर खारे नहीं। धीर बनो पर सुस्त नहीं। सरल बनो पर मूर्ख नहीं। सावधान बनो पर वहमी नहीं। उत्साही बनो पर जल्दबाज नहीं। न्यायी बनो पर निर्दयी नहीं। चंगे बनो पर दुर्बल नहीं। दृढ़ बनो पर हठी नहीं। प्रेमी बनो पर पागल नहीं। समालोचक बनो पर निंदक नहीं। नम्र बनो पर चापलूस नहीं। स्पष्ट बनो पर उद्दण्ड नहीं। चतुर बनो पर कुटिल नहीं।

[प्रस्तुति : प्रणव आर्य]

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

यज्ञ से पर्यावरण भी शुद्ध होता है

दिल्ली-रोहतक रोड स्थित चौ. भैयाराम आटो मार्किट ट्रक डिवीजन में ट्रक डिवीजन भंडारा सेवा समिति की ओर से गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी मंगलवार को वार्षिक भंडारे का आयोजन किया गया भंडारे से पूर्व यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें मार्केट सदस्यों और कई गणमान्य लोगों ने आहुति डाल सुख समृद्धि की कामना की। आत्मशुद्धि आश्रम के स्वामी धर्ममुनि के सान्निध्य और सिद्धीपुर गुरुकुल की कन्याओं की उपस्थित में हुए इस यज्ञ में मार्किट सदस्यों सहित सैकड़ों लोगों ने आहुति डाल भगवान से सुख-समृद्धि की कामना की। यज्ञ में यजमान की भूमिका पूर्व एमएलसी उदय सिंह मान, नगर परिषद् के पूर्व चेयरमैन कर्मवीर राठी, नगर परिषद् चेयरमैन रवि खत्री, वेद तहलान और रोशन मलिक रही। स्वामी ध र्ममुनि दुग्धाहारी जो महाराज ने उपस्थित लोगों को यज्ञ की महत्व के बारे में बताया। प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वज सुख-शांति के लिए यज्ञ करते रहे हैं। यज्ञ से मनुष्य को तो लाभ होता ही है, साथ ही पर्यावरण भी स्वच्छ होता है। यज्ञ से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा पर्यावरण में फैले प्रदूषण को दूर करती है। अंत में भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। मुख्यातिथियों समेत आटो मार्किट एसोसिएशन के प्रधान सुंदर सिंह दलाल, राजेन्द्र अरोड़ा, भंडारा समिति के प्रधान संतराम, अतर सिंह, राजू दलाल, पप्पू मिस्त्री, संजीव मलिक, रमेश राठी, दीवान, डीसी सैनी, पम्मी मदान, दिनेश, राहुल मंडोरा सहित अनेक लोगों ने भंडारे में सेवा की।

वैदिक चिन्तन डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'वेदश्री सम्मान'

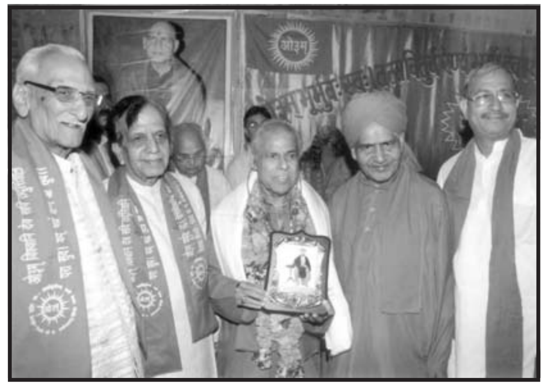

देहरादून (उत्तराखण्ड) रविवार, 11 मई 2014-अग्निहोत्र धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा 11वें स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस के अवसर पर वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के विशाल सभागार में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, प्रख्यात साहित्यकार एवं भावनगर विश्वविद्यालय भावनगर (गुजरात) के पूर्व प्रोफेसर एवं हिन्दी-विभागाध्यक्ष डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली-निवासी) को 'वेदश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। लगभग आठ सौ आर्यजनों से खचाखच भरे सभागार में मोतियों की माला, शाल, प्रशस्ति-पत्र युक्त महर्षि दयानन्द का चित्र, प्रतीक-चिह्न, ग्यारह हजार रूपये की सम्मान-राशि का चेक एवं ग्रंथादि स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री वेदप्रकाश गुप्ता, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा आदि ने समवेत रूप से डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

प्रेरणादायी दान

श्री जयप्रकाश जी आर्य महम ने आश्रम के सहयोगार्थ घर में गुल्लक रख दी। और सभी पारिवारिक सज्जनों को प्रेरित किया कि इसमें परोपकार्य हेतु पैसे डालें। महीने में गुल्लक भर गया तो आश्रम को दे दिया गया। जिसमें 1213/- रूपये निकले। आप भी इस आर्य परिवार से प्रेरणा लेकर अपने घरों में गुल्लक रखें। जिससे दानादि में प्रवृति बनी रहें। हम आश्रम की ओर से परिवारजनों की सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

- व्यवस्थापक विक्रमदेवशास्त्री

जागते रहो!

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यो जागार: तमृच: कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका:।।

- ऋ 5.44.14, सा. उ. 9.214

ऋषि:-**अवत्सार: काश्यप:।।**
देवता-**विश्वेदेवा:।।** छन्द:-**विराटत्रिष्टुप।।**

शब्दार्थ-य: जागार=जो जागता है **तम्**= उसे **ऋच:**=ऋचाएँ, स्तुतियां **कामयन्ते**=चाहती हैं, **य: जागार**=जागार=जो जागता है **तं उ**=उसे ही **समानि**=साम, स्तुतिगान **यन्ति**=प्राप्त होते हैं और **य: जागार**=जो जागता है **तम्**=उसे, उसके सामने आकर **अयम्**=यह **सोम:**=सोम, भोग्य-संसार **आह**=कहता है कि **''तव अहं अस्मि**=मैं तेरा हूँ **सख्ये न्योका:**=तेरी मित्रता में ही मेरा निवास है, तेरे सख्य के लिए मैं सदा नियम स्थान पर उपस्थित हूँ।''

विनय- संसार में परिपूर्ण जाग्रत तो एक ही है, वह अग्नि परमात्मा है। यह सर्वथा अनिद्र है, त्रिकाल में जाग्रत है। उसमें तमोगुण का (अज्ञान व आलस्य का) स्पर्श तक नहीं है। अतएव सब ऋचाएं, संसार की सब स्तुतियाँ, उसी को चाह रही हैं-उसके प्रति हो रही हैं। सब सामों का, मनुष्यों के किए सब यशोगानों का, सब स्तुति गीतियों का भाजन भी वही एक परम-जाग्रत देव हो रहा है और देखो, यह समस्त भोग्य, संसार, भोग्य बना हुआ यह सोमरूप ब्रह्माण्ड उसी जागरूक अग्निदेव के पैरों में पड़ा हुआ कह रहा है ''मैं तेरा हूँ, तेरे ही आश्रम से मेरी सत्ता है, तेरी मित्रता में मेरा निवास हो रहा है, तुझसे हटकर मुझे और कहीं ठौर नहीं है।''

इसी प्रकार हम मनुष्य-जीव भी यदि अपनी शक्तिभर सदा जाग्रत रहेंगे, सदा सावधान और कटिबद्ध रहेंगे, तमोगुण को दूर हटाकर सदा चेतनयुक्त, अतन्द्र रहेंगे, आलस्य के कभी भी वशीभूत न होकर अपने कर्त्तव्य को तत्क्षण करने के लिए सदा तैयार, उद्यत रहेंगे, कभी प्रमाद न करते हुए-बिना भूलचूक के अपने कर्तव्य को ठीक-ठीक करते जाने के अभ्यासी हो जाएंगे, तो हम भी उतने ही अंश में 'अग्नि'-रूप हो जाएँगे।

परन्तु वास्तविक भोक्ता होना आसान नहीं। संसार के विषयी पुरुष तो भोगों के भोक्ता होने की जगह भोगों के भोग्य बने हुए हैं, परन्तु वही ऐश्वर्य, वही सुख, वही सुख-भोग, जिसके पीछे यह सब संसार दौड़ता फिरता है, पर जो लोगों को मिलता नहीं, वही ऐश्वर्य (सोम)-जाग्रत् पुरुष के सामने हाथ बांधकर, सेवक होकर, शरण पाने के लिए आ खड़ा होता है। अग्नित्व को प्राप्त उस मनुष्य के लिए वास्तव में संसार के सब भोग्य-पदार्थ उसकी मित्रता में, उसके हितसाधन के निमित्त, सदा नियत स्थान पर उपस्थित रहते हैं, उसे उनपर ऐसा प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है, अत: हे मनुष्यो! जागो, जागो, सदा जाग्रत् रहो! तामसिकता त्यागो और निरालस्य-जीवन का अभ्यास करो। जागरूकों के लिए ही यह संसार है, स्तुत्यता, लोकमान्यता, यश, भोक्तृत्व यह सब जागते रहनेवाले के लिए लिए है।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

सम्पादकीय

बोधपूर्वक स्वप्न-निद्रा में प्रवेश से चित्त एकाग्र हो जाता है।

मन या चित्त की चंचलता आज बहुत बड़ी समस्या है इसकी एकाग्रता बिना मनुष्य को शान्ति कहां। इसको एकाग्र करने के बहुत से उपाय बताये जाते हैं उनमें से एक उपाय पतंजलि मुनि ने **स्वप्ननिद्राज्ञानालम्बनं वा** योग दर्शन ।। 1.38 ।। में कहकर बताया है जो साधको के लिए अत्यन्त उपादेय है अर्थात् **स्वप्न-निद्रा-ज्ञान-आलम्बनम्**=स्वप्न-ज्ञान और निद्रा-ज्ञान का आश्रय वाला **वा**=भी चित्त को एकाग्र करने वाला होता है। स्वप्न और निद्रा में बोधपूर्वक प्रवेश करने से भी चित्त को एकाग्र किया जा सकता है। चित्त की व्याख्या करने के लिए इसे चेतन, अचेतन, अतिचेतन और परमचेतन चार भागों में विभक्त कर लिया जाता है। जाग्रत अवस्था चेतन मन है और स्वप्न, नींद अचेतन मन से संबंधित है। चेतन मन जागा हुआ मन है जो विचार करता है, इच्छा करता है और तर्क करता है, जो सामाजिक, शिक्षा, संस्कार और शुभ-अशुभ आदि-आदि बातें स्वीकार करता है। यह जगा हुआ मन जब थक जाता है अर्थात् अपनी ऊर्जा खो देता है तो ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अचेतन में चला जाता है। यानि सो जाता है और ऊर्जा पाकर तरोताजा होकर पुनः उद्‌बुध हो जाता है। जागना और सोना इनके बीच ही मनुष्य बना रहता है। जाग्रत अवस्था में भी व्यक्ति पूर्णतया जागा हुआ नहीं होता। उसमें भी वह विचार इच्छा पैदा करता रहता है। ये भी एक प्रकार के स्वप्न हैं जो जाग्रत अवस्था में चलते रहते हैं। हमें इसका बहुत कम बोध होता है। जाग्रत अवस्था के स्वप्नों का हमे बोध नहीं तो स्वप्नावस्था के स्वप्नों का कैसे बोध हो सकता है? अगर स्वप्नों का भी बोध होता है तो जाग्रत अवस्था में ही होता है। स्वप्नावस्था में यह बोध हो जाये कि मैं स्वप्न देख रहा हूं तो स्वप्न उसी क्षण टूट जाता है। इसलिए स्वप्नों को जानने के लिए एक चेतन मन को अधिक जगाने की आवश्यकता है। यदि हम जाग्रत अवस्था में अधिक जागने का अभ्यास करें तो हम अचेतन मन की क्रियाओं में भी जागे रह सकते हैं। हमारी जाग्रत अवस्था इतनी तेज नहीं है कि हम जाग्रत अवस्था में अपने विचारों या भावों को देख सकें। हमें अपने छोटे-छोटे कार्यों को सचेत होकर करना होगा तभी चेतन मन अधिक तेज हो सकता है। सचेत होकर ही हम स्वप्न और निद्रावस्था में बोधपूर्वक रह सकते हैं और समाधि में प्रवेश कर सकते हैं। यहां महर्षि पतञ्जलि स्वप्न और नींद में प्रवेश कर चित्त को स्थिर करने के उपाय का वर्णन करते हैं अर्थात् स्वप्न और नींद से भी गुजरकर व्यक्ति समाधिस्थ हो सकता है। योगियों ने स्वप्न और निद्रा में कार्य किया है और उन्होंने बड़ी रहस्यात्मक बातें बताई हैं। चेतन मन के बाद अचेतन आता है यह पूर्णतया सोया हुआ रहता है। हमें इसका कुछ भी पता नहीं होता। इसमें व्यक्ति के भाव संस्कार मौजूद रहते हैं। यहां जो उठता है वह इतना प्रबल होता है कि व्यक्ति का चेतन मन रोकने में असमर्थ होता है। भूख, प्यास, काम, क्रोध, लोभ, मोह यहीं से पैदा होते हैं जिन्हें साधारण मानव रोकने में असफल होता है। यहां सभी भाव स्वीकृत हैं यहां शुभ-अशुभ का कोई विचार नहीं होता। यहां इच्छा पैदा नहीं होती, यहां जो पैदा होता है, व्यक्ति की अत्यन्त आवश्यकता है। इसे दबाया नहीं जा सकता। दबाने पर यह और विस्फोटक होता है। इसका सचेतन होकर ही रेचन हो सकता है। इसका रेचन कुछ स्वप्न में हो जाता है, जिससे आदमी राहत पा लेता है। यदि स्वप्न न हो तो मनुष्य पगला जायेगा। इसके बाद अति चेतन मन है। यहां मन अधिक जगा हुआ होता है। इसकी झलक कभी-कभी मिलती है। यहां आकर व्यक्ति परिवर्तित हो जाता है। एक नया जन्म होता है और शान्ति पाता है। इसके बाद परम चेतन मन है। यहां समग्र रूप से साक्षी हो जाता है। यहां परमानन्द है। किसी तरह की दुविधा नहीं है। यहां हमारा चैतन्य समग्र जागा हुआ होता है। चेतन मन से परम चेतन तक की यात्रा है। इसे स्वप्न और नींद में प्रवेश कर भी पूरी कर सकते हैं। अब इसकी प्रक्रिया पर विचार करते हैं कि स्वप्न से गुजरकर निद्रा में प्रवेश करते हुए चैतन्य अवस्था में तटस्थ हो जाये। प्रथम हमारा चेतन मन

बाहर से अनेक तरह की बातें सीखता है, धारणा करता है, संग्रह करता है और सोचता-विचारता नई-नई इच्छा निर्मित करता है। यदि ये सब पूरी न हों तो व्यक्ति ज्यादा प्रभावित नहीं होता इनके बिना भी अच्छी तरह से जीता है। ये भी जाग्रत अवस्था के स्वप्न हैं। यदि जाग्रत अवस्थाओं की क्रियाओं के प्रति जाग जाये तो चेतन मन की जागरूकता बढ़ती है और वह सभी क्रियाओं के प्रति तटस्थ होना प्रारम्भ करता है। इसी तटस्थता या जागरूकता का प्रयोग सोने से पहले किया जाता है। दिन भर के कार्यों में जागरूकता बढ़ाकर जब हम सोते हैं तो सोने से पहले विश्रामपूर्वक लेट जायें और पूर्ण निष्क्रिय होकर जागरूक रहें और नींद की प्रतीक्षा करें। हम सघन रूप से निष्क्रिय होकर जागे रहें, फिर हमें चारों ओर से निद्रा घेरेगी और हम धीरे- धीरे निद्रा में प्रवेश कर जायेंगे परन्तु जागे हुए रहेंगे। सब सोई हुई अवस्था होगी लेकिन चेतना जागी हुई होगी। इसके बाद अचेतन मन की क्रियाओं का भी बोध होगा और कभी-कभी अति चेतन अवस्था की भी झलक मिलेगी। इसी तरह सतत् अभ्यास करेंगे तो परम चेतन अवस्था की भी झलक मिलेगी। जागरूक निद्रा में ही कई तरह के स्वप्नों का बोध होगा जो विभिन्न स्तरों के तथ्यों का बोध होगा। इन स्वप्नों को भी पांच भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में चेतन मन की इच्छा, कामनाएं, महत्वाकांक्षाएं और अनेक तरह के विचार आते हैं जो बनते और बिगड़ते रहते हैं। ये अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। दूसरे, अचेतन मन द्वारा आवश्यकता की पूर्ति करना जो अत्यन्त आवश्यक है। इन्हें दबाया नहीं जा सकता। इन्हें ठीक से जानकर इनकी पूर्ति करनी है, नहीं तो सुख पूर्ण नहीं हुआ जा सकता। तीसरे प्रकार के वे स्वप्न हैं जहां अत्यन्त जागरूक अवस्था में अति चेतन से जुड़ा जाता है। यहां किसी तरह की कोई आसक्ति नहीं होती। जो घटित होता है, वह जीवन को पूर्णतया बदल देता है परन्तु कभी-कभी इसकी झलक मिलती है। चौथे भाग में वे स्वप्न आते हैं जो पिछले जन्मों की अनुभूति करा जाते हैं। इन्हीं स्वप्नों के माध्यम से पूर्व जन्मों को जाना जाता है। जो हम थे उनमें से किसी जन्म का बोध हो जाता है। जो पिछले जन्मों को जानकर व्यक्ति स्वयं को बदल लेता है। पूर्व जन्मों के तथ्य इसी प्रकार के स्वप्नों से जाने जाते हैं और पांचवें भाग में वे स्वप्न आते हैं जो भविष्य कालिक घटनाओं को स्वयं में ही देख लेते हैं। यह भी कभी-कभी घटित होता है अत्यन्त जागरूकता में जागरूकता प्राथमिक बात है। इसके अभाव में कुछ भी नहीं जाना जा सकता। इसलिए जागरूक होकर ही नींद और स्वप्न में प्रवेश किया जा सकता है अन्यथा नहीं। जागरूकता में ही सभी तथ्यों को सम्यक् जाना जाता है। अन्यथा सब घुल-मिल जाता है। इसलिए स्वप्न और नींद में बोध पूर्वक प्रवेश किया जाये तो इस मार्ग द्वारा भी प्रभु तक पहुंचा जा सकता है। और चित्त की स्थिरता प्राप्त की जा सकती है। **-राजहंस मैत्रेय**

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. **आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।**
2. **बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।**
3. **बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।**
4. **आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।**

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

जीवन-यात्रा के चार पड़ाव

- पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

जीवन-विषयक दो दृष्टियाँः भोग तथा त्याग-बम्बई का शहर है, सामने लम्बी सड़क है, लोगों की भारी भीड़ उमड़ी चली जा रही है, कन्धे से कन्धा टकराता है, कुछ आ रहे हैं, कुछ जा रहे हैं, स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध-युवा सभी हैं। किसी को खड़ा करके पूछिये-क्यों भाई, क्या हुआ? इस तरह बेतहाशा किधर भागे जा रहे हो? तो वह बिना रूके, चलता-चलता जो कह जाता है उसका मतलब होता है, रोटी का फिक्र, आगे-पीछे का फिक्र नहीं, आज का और अब का फिक्र इसी फिक्र में वह क्या और दूसरे क्या, सभी भागे जा रहे हैं।

अब हरद्वार का नजारा देखिये। गंगा का तट है, हर की पैड़ी, सैकड़ों साधु भगवा रमाये इधर-उधर टहल रहे हैं, कुछ लोग मण्डली लगाये धर्म की चर्चा कर रहे हैं। किसी मण्डली में जाकर पूछिये, महात्मा लोगो! आपको मालूम है, आज संसार की क्या दशा है, रोटी का प्रश्न सब को व्याकुल कर रहा है, इसी समस्या को हल करने में प्रत्येक व्यक्ति जुटा हुआ है, तो वे क्या उत्तर देते हैं? महात्माओं की मण्डली कहती है, हाँ, हमें मालूम है, परनतु हमें इससे क्या, हम तो आत्मा के चिन्तन में लगे हुए है, आज की और अब की नहीं, हम आगे और पीछे की समस्या को हल करने में लगे हैं। संसार अनित्य है, घर-बार, बन्धु-बान्धव स्त्री-पुत्र सब अनित्य हैं, इन्हें छोड़ हम नित्य आत्मा-परमात्मा की खोज में लगे हुए हैं।

जीवन के विषय में यही मोटी-मोटी दो दृष्टियाँ हैं। एक वर्तमान में जीना चाहता है, उसे भविष्यत् का विचार नहीं, दूसरा भविष्यत् के लिए जीना चाहता है, उसे वर्तमान का ख्याल नहीं। जीवन के विषय में ये दो दृष्टियां जहां भी जीवन पर विचार हुआ, उत्पन्न हुई हैं। प्राचीन ग्रीस के विचार कों में वर्तमान में जीने वाले 'एपीक्यूरिअन्स कहलाते थे। भविष्यत् के लिए जीने वाले स्टोइक्स कहाते थे। एपीक्यूरिअन लोगों के विषय में कहा जाता है कि वे जीवन का सम्पूर्ण आनन्द, जल्दी से जल्दी, जितना हो सके उतना, आज और अभी लूट लेना चाहते थे, आगे क्या होता है, क्या नहीं होता-इसका उन्हें कोई भरोसा नहीं था। स्टोइक लोग तपस्वियों का जीवन व्यतीत करते थे, आज का ख्याल न करके आगे जो होगा उस दृष्टि से जीवन का कार्यक्रम बनाते थे। इनमें से एक भोग-मार्ग था, दूसरा त्याग-मार्ग था। संसार के इतिहास में इन्हीं दो मार्गो में से किसी एक मार्ग पर मानव-समाज चलता आया है। कुछ लोग भोग-मार्ग के उपासक रहे हैं, भविष्यत् की चिन्ता में वर्तमान का तिरस्कार करते रहे हैं। इन दोनों मार्गो को मिलाने का यत्न बहुत थोड़े लोगों ने किया है। महात्मा बुद्ध ने आध्यात्मिकता के शिखर पर खड़े होकर आवाज दी और सैकड़ो-हजारों घरानों में भिक्षु और भिक्षुणियों को उत्पन्न कर दिया। शंकराचार्य के ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या के जय घोष को सुनकर घरों के घर भगवा डालकर खाली हो गये, मसीह के पीछे चलकर कितने ही लखपतियों के बालक साधु बन गये। इसके विपरीत संसार के जंजाल में फँसाने के लिए तो किसी बड़े उद्योग की आवश्यकता ही नहीं। इधर तो मनुष्य की प्रवृत्ति ही उसे घसीटे लिए जाती है। इसलिए जहाँ बुद्ध, शंकराचार्य और मसीह के पीछे इने-गिनों ने कदम बढ़ाया, वहाँ मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति ने अधिकांश व्यक्तियों को सदा से संसार में बांधे रखा।

वैदिक-संस्कृति का दृष्टिकोणः

भोग और त्याग का समन्वय है- जीवन के इन दो मार्गो पर वैदिक-संस्कृति के विचारकों ने खूब सोचा-समझा था। मनुष्य भोग का जीवन व्यतीत करे या त्याग का, दुनिया में रहे और इसका पूरा-पूरा आनन्द उठाये या इससे भागने की चिन्ता करें। वर्तमान में जीवन-रस के घूँट पीने में मस्त रहे या भविष्यत् की सोचे, प्रवृत्ति-मार्ग पर चले या निवृत्ति-मार्ग पर इस प्रश्न को भारत के प्राचीन ऋषियों ने एक अनोखे तौर पर हल किया था। उन ऋषियों ने गाया था-**'ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥'** हे मानव! संसार का सम्पूर्ण भोग्य पदार्थ तेरे पिता परमात्मा का है यह वैभव उसका है। उसका समझकर इसका उपभोग कर, जैसे तुझे मिला है वैसे किसी दिन तुझ से छूट भी जाना है-यह समझकर, इसे अपना न समझकर उपभोग कर,

त्यागपूर्वक उपभोग कर, निवृत्ति पूर्वक प्रवृत्ति कर। जब छोड़ने की घंटी बजे, तब छोड़ने के लिए तैयार रहकर उपभोग कर।

भोग-त्याग, प्रवृत्ति-निवृत्ति, वर्तमान-भविष्यत्-ये दोनों विकट समस्याएं हैं, वैदिक-संस्कृति ने इन दोनों का समन्वय कर दिया था। भोग ठीक है, परन्तु भोग का अन्त त्याग में है, प्रवृत्ति ठीक है, परन्तु प्रवृत्ति का अन्त निवृत्ति में है। वर्तमान ठीक है, परन्तु वर्तमान का प्रारम्भ भूत और अन्त भविष्यत् में है, भोग और प्रवृत्ति इसलिए करे ताकि त्याग और निवृत्ति की भावना पक्की हो जाये। संसार का अन्त त्याग और निवृत्ति है। यह न हो कि जब मनुष्य त्याग की अवस्था में पहुँचे, तब भोग की वासना बनी रहे और उसे त्याग में से फिर-फिर खींचकर भोग और प्रवृत्ति की तरफ धकेलती रहे। त्याग की अविचल चट्टान पर खड़ा होकर मनुष्य भोग के लुभावने रूप की तरफ आँख उठाकर भी न देखें। यह तभी हो सकता है जब वह भोग में से गुजर आये उसकी नश्वरता को व्याख्यानों द्वारा नहीं, अनुभव द्वारा परख ले। भोग टिकने वाला नहीं-इस बात की अमिट छाप मस्तिष्क में बिठाने के लिए ही भोग को रचा गया है। प्रवृत्ति की तरफ हम फिर-फिर न लौटें-यही प्रवृत्ति का अन्तर्निहित उद्देश्य है। जितने भोग हैं वे त्याग की तरफ ले जाते हैं, जितनी प्रवृत्तियाँ हैं वे निवृत्ति की तरफ ले जाती हैं, जितना वर्तमान है वह भविष्यत् की तरफ ले जाता है। भोग और त्याग, प्रवृत्ति और निवृत्ति, वर्तमान और भविष्यत् के इस समन्वय को लेकर भारत के ऋषियों ने एक वैज्ञानिक ढंग पर जीवन का कार्यक्रम बनाया था। वह कार्यक्रम क्या था?

पेन्ट-बुशर्टधारी साधुः चन्द्रभान चौधरी

मान्यवर बन्धुओं! ऋग्वेद में एक मन्त्र की सूक्ति है-''साधवः त्वे अपिक्षेमासः सन्तिः'' साधु जन तुझ (प्रभु) में ही निवास करने वाले होते हैं। चौधरी जी के जीवन में यह वेद सूक्ति पूर्णरूप से समायी हुई है। हर समय शान्त मुस्कराते हुए सेवा कार्यो में लगे रहते हैं, कष्टों, आपत्तियों से घबराते नहीं, ''तत्सर्व शिवमस्तु'' ईश्वर जो कुछ करता है ठीक ही करता है, यह भावना सदैव ही बनी रहती है। ईश्वर पर पूर्णरूप से विश्वास रखते ही पुलिस विभाग में नौकरी करते हुए स्वच्छ ईमानदार धर्मात्मा होने का परिचय दिया। अदम्य साहस, कर्मठता, अनुशासन, प्रशासनिक दक्षता और राष्ट्रप्रेम का अद्भुत परिचय देकर निरूत्साहित व्यक्तियों को भी उत्साहित किया कि एक ईश्वर विश्व प्रभुभक्त क्या-से-क्या कर दिखाता है और कहाँ-से-कहाँ पहुँच जाता है।

प्रिय सज्जनों! साधु के लक्षण शास्त्रों में मिलते है-साधनोति प्रकार्यमिति साधुः'' जो अन्यों के कार्य को साधता है, करता है वह साधु है। यह वाक्य यदि सार्थक देखना है तो चौधरी जी में देखें दीन-हीन रोगों से पीड़ित दुःखियों को देखकर आपका ह्दय तड़प उठता है और आंखो से अश्रु धारा बहने लगती है।

उनके दुःखों-कष्टों को दूर करने में जुड़े परिवार अपने घर से आहुति देकर कपड और धनादि घर-घर जाकर संग्रह करना फिर उन्हें पहुँचाना आप जैसा महान् निष्काम सेवी ही कार्य कर सकता है। अनेकों आर्य संस्थानों सेवी संस्थाओं को चौधरी जी का आर्थिक अस्सी वर्ष के वृद्ध शरीर के द्वारा पहुँचाए लौकेषणा से दूर, मान सम्मान से रहित

सरलता, अर्थसुचिता के धनी, व्यवहार कुशलता के सभी को मान देने वाले चौधरी जी का चरित्र इस श्लोकानुसार देखने को मिला।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग न च पुनर्भवम्
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तनाम्।

की भावनाओं से भरपूर पेंट-बुशर्टधारी, कर्मयोगी, चलती-फिरती समाज सेवी विख्यात संस्था के रूप में श्री चन्द्रभान जी चौधरी को हमने देखा, जाना, समझा, पहचाना, वैसा संक्षेप में कह दिया गया है। प्रभु से प्रार्थना है कि ''भूयच्च शरदः शतात्'' सौ वर्ष से भी अधिक आयु के चलते-फिरते, देखते-सुनते और उपदेश देते हुए निरन्तर सेवा में लगे रहें।

- स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी

वेद और योगेश्वर महर्षि दयानन्द

- डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'

वेद ने कहा- विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा। ऋ.1।।

हे जीवो! व्यापकेश्वर के दिव्य कर्मो-रचना को देखो। जिस प्रभु से नियम व्यवस्था प्रकट होते हैं। ईश्वर जीव का सखा अन्तर्यामी है।

राष्ट्र पितामह दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-

प्रश्न-वेद किन का नाम हैं?

उत्तर-''जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक्संहिता आदि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्य-असत्य का ज्ञान होता है, उसको वेद कहते हैं।'' चारों वेद सर्वथा सबको माननीय हैं। जो ईश्वरोक्त हैं, वही वेद होता है। जीवोक्त को वेद नहीं कहते। वेद स्वतः प्रमाण हैं और ब्राह्मण ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं, वेदानुकूल का प्रमाण होता है।

प्रश्न-वेद निभ्रम और स्वतः प्रमाण क्यों हैं?

उत्तर- क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्यायुक्त तथा सर्वशक्ति वाला है, वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। मानव जाति का परम धर्म है। इस कारण से वेद का कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण योग्य नहीं होते, क्योंकि वे जीव सर्वविद्यायुक्त और सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्द स्वरूप नहीं होते। ईश्वर ही सच्चिदानन्दस्वरूप है। जैसे सूर्य और दीपक अपने ही प्रकाश से प्रकाशमान होके सब क्रिया वाले द्रव्यों को प्रकाशित कर देते हैं, वैसे ही वेद भी अपने प्रकाश से प्रकाशित होके अन्य ग्रन्थों को भी प्रकाशित करते हैं। अतः जो-जो ग्रन्थ वेदों से विरूद्ध हैं वे कभी प्रमाण वा स्वीकार करने के योग नहीं होते वेदों के अनुकूल ही होने से अन्य प्रमाण कहे जाते हैं। अन्यथा नहीं। सृष्टि के आदि में मानव सृष्टि में वेदों का ज्ञान-''अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा चार दैव्य ऋषियों को दिया, इन चारों मनुष्यों को, जैसे वादित्र को कोई बजावे वा काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था।''

अपरा-विद्या, परा-विद्या

वेदों में दो विद्या हैं, अपरा और परा। जिससे पृथिवी और तृण से लेके प्रकृति, जीव और ब्रह्मपर्यन्त सब पदार्थो के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है वह 'अपरा' और जिसे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की प्राप्ति होती है वह परा विद्या है। इनमें 'परा विद्या' अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है, क्योंकि 'अपरा' विद्या का ही उत्तम फल 'परा' विद्या है। सृष्टि कर्त्ता परमात्मा ने जनमात्र के लिए 'कल्याणी वेदवाणी' का विधान किया। उन्हें अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चार दैव्य ऋषियों के हृदय में स्थापित किया, हृद्यज्ञरादये (ऋग्) इन चार ऋषियों से वेद प्रचार प्रारम्भ हुआ। वेदों के विरूद्ध ऋषि दयानन्द ने सबका निर्भीक होकर खण्डन किया। वेदों का वेदानुकूल प्रमाण का मण्डन किया। ऋग्वेद से लेके जैमिनी पर्यन्त और जैमिनी ऋषि से लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋषि पर्यन्त आप्तोपदेश वेदों का व्याख्यानरूप आर्ष-ग्रन्थों का वैदिक परम्परानुसार वेदानुकूलतया ही प्रमाण हम मानते हैं। वेद अपौरूषेय ज्ञान हैं। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद, अंगिरा ऋषि को अथर्ववेद विज्ञान का उपदेश दिया। सर्गारम्भ में किसी सर्वज्ञ ईश्वर के सिवा कौन मनुष्यों को ज्ञान दे सकता है? यदि वह ज्ञान न देता तो मानवी जाति को ज्ञान न होता और न धारा रूप में ज्ञान आगे बढ़ता। यदि पीछे ज्ञान देता, पूर्व सृष्टि इसके लाभ से वंचित रहती। सर्गमध्य में तो आप्त पुरुष भी ज्ञान प्रसार कर सकते हैं।

1. जो पवित्रात्मा ज्ञान में विशेष बढ़ा हुआ था, उसको ऋग्वेद का प्रकाश मिलता है और इसी कारण उसको 'अग्नि' नाम दिया जाता है।

2. जो पवित्रात्मा कर्मकाण्ड में विशेष निपुण रखता था, उसको यजुर्वेद का ज्ञान दिया जाता है और उसको 'वायु' नाम दिया जाता है।

3. जो पवित्रात्मा उपासना में विशेष योग्यता रखता था, उस पर सामवेद का प्रकाश होता है और उसका 'आदित्य' नाम पड़ता है।

4. जो पवित्रात्मा संशय रहित पूर्ण वैज्ञानिक था, उस पर 'अथर्ववेद' का आविर्भाव होता है और उसका नाम 'अंगिरा' होता है।

जब जब सृष्टि होती है, तब-तब पूर्व सृष्टि के सब पवित्राचार आत्माओं को वर्तमान सृष्टि की अथोनिज उत्पत्ति के समय वेद का पवित्र ज्ञान हृदयस्थ रूप में दिया जाता है। चाहे वे चार कोई हों, अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा नाम गौणिक होते हैं व्यक्ति विशेष वाचक नहीं। सब ही सृष्टियों में ये नाम दिये जाते हैं। जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, परमेश्वर है, उससे ही चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आकर फिर भीतर को जाता है, वैसे ही सृष्टि के आदि में ईश्वर वेदों को उत्पन्न करके संसार में ज्ञान का प्रकाश करता है और प्रलय में वेद इस रूप में न रहकर बीजांकुरवत उसके ज्ञान में बने रहते हैं। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही अंकुर वृक्षरूप होने के बाद भी बीज के भीतर रहता है, वैसे ही वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता, वे नित्य हैं। यह बात निश्चित है कि ईश्वर के दिये उपदेश-वेद के पढ़ने और ज्ञान के बिना किसी मनुष्य को यथार्थ ज्ञान व कोई भी मनुष्य विद्वान व किसी मनुष्य को ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य भी नहीं हो सकता। जैसे मानवों के भाषणादि व्यवहार के सम्पर्क से दूर एकान्त में रखने से एक बालक को कुछ यथार्थ ज्ञान व बोलचालादि का व्यवहार नहीं आता और जैसे वनों में रहने से बिना उपदेश के कारण मनुष्यों की प्रकृति पशुओं की भांति देखने में आती है, वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना सृष्टि के आदि से लेकर आज तक सब मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है। जैसे इस समय किसी शास्त्र को पढ़के किसी का उपदेश सुनके और मनुष्यों के परस्पर व्यवहारों को देखकर ही सब मनुष्यों को ज्ञान होता है, ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य होता है, अन्यथा नहीं, वैसे ही सृष्टि के आदि में यदि यह उपदेश न होता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थो की यथार्थ विद्या न आती। दूसरे सृष्टि के आरम्भ में पढ़ने और पढ़ाने की कुछ भी व्यवस्था नहीं थी और न कोई विद्या का ग्रन्थ ही था, इसलिए ईश्वर का वेदों का ज्ञान देना आवश्यक था। यह वेद ईश्वर की सत्य विद्या है।

विद्या का गुण स्वार्थ और पदार्थ दोनों सिद्ध करता है। परमेश्वर हमारे माता-पिता के समान करूणा धारण करता है कि सब प्रकार से हम सुख पावें। इससे ही गुण की सफलता सिद्ध की है। जो परमेश्वर अपनी वेद-विद्या का उपदेश मनुष्यों के लिए न करता तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि किसी को यथावत् प्राप्त न होती, उसके बिना परम-आनन्द भी किसी को न होता। जैसे उस परम कृपालु ईश्वर ने प्रजा के सुखार्थ कन्दमूल फल और घासादि छोटे-छोटे भी पदार्थ रचे हैं, वैसे ही सब सुखों का प्रकाश करने वाली, सब सत्य विद्याओं से युक्त वेद विद्या का उपदेश भी प्रजा के सुख के लिए वह क्यों न करता? वेद ईश्वर की अमृत पवित्र वाणी है। वेद भगवान् ने उपदेश दिया है-**विद्यां च अविद्यां च यस्तद वेदो भयं सः। अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतमश्नुते॥**

जो विद्या ज्ञान विज्ञान को व अविद्या के रहस्यों दोनों को साथ-साथ जानता है, वह अविद्या-कर्मोपासना से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर, विद्या-यथार्थ ज्ञान से अमृत-मोक्ष को सुखानन्द को मनुष्य प्राप्त कर लेता है। वैदिक संस्कृति के आदि स्रोत वेद ही हैं। वेद ही मानव जीवन के मूल ग्रन्थ हैं। विश्व के पुस्तकालयों वाचनालयों में मनुष्य जाति के सर्वोत्तम ज्ञान वेद ही हैं। दुनिया में सबसे प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान के वेद विद्या ग्रन्थ पुस्तक हैं। मानवजीवन का सर्वोत्तम ज्ञान वेद ही हैं। मानवजाति के सुधारक वैदिक धर्म संस्कृति आर्ष ग्रन्थों के प्रचारक, प्रसारक महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदोद्धोरक, नारी जाति के रक्षक-उत्थान करने वाले आध्यात्मिक गुरु राष्ट्रपितामह थे। अतः हम वेद और योगेश्वर महर्षि दयानन्द सरस्वती के संदेश उपदेश की जानकर जीवन को सार्थक बनावें, सुसंस्कार, उत्तम गुण कर्म स्वभाव जीवन में लावें और 'मनुर्भव'-मनुष्य बन-मननशील बनने का प्रयत्न करते रहें। परोपकर सेवा भाव जीवन में अपनावें। वैदिक धर्म ही सर्वोपरि धर्म है, महर्षि का संदेश वेदों का सत्य उपदेश है। वेद सत्य ज्ञान हैं। सूर्य, चन्द्रमा की भांति हम कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें।

- जे-58ए, करतार नगर, दिल्ली

उपनयन संस्कार क्यों करायें?

- कन्हैया लाल आर्य, कोषाध्यक्ष'

कन्हैया लाल आर्य

उपनयन संस्कार इसलिए किया जाता है कि इसके बाद बालक या बालिका वेदादि शास्त्रों अध्ययन का प्रारम्भ आजकल की भाषा में 'शिक्षा का प्रारम्भ' करना है। उपनयन संस्कार में मुख्य कर्म यज्ञोपवीत का धारण करना है। जो लोग अपनी सन्तान को सुसंस्कृत तथा गुणवान बनाना चाहते हैं उनकी सन्तान का उपनयन जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि में महर्षि मनु का उद्धरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं-

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्य विप्रस्य पञ्चमे।
राज्ञो बलार्थिन षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे॥

अर्थात् जिनको शीघ्र विद्या बल और व्यवहार करने की इच्छा हो और बालक भी पढ़ने में समर्थ हुए हों तो ब्राह्मण बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से पांचवे, क्षत्रिये बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से छठे और वैश्य बनने के इच्छुक लड़के का जन्म व गर्भ से आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत करें।

महर्षि मनु ने उपनयन की अन्तिम अवधि इस प्रकार की है।- सोलह वर्ष तक ब्राह्मण का, बाईस वर्ष तक क्षत्रिय का निर्धारित समय पर संस्कार न होने पर श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा निन्दित तथा पतित माने जावें।

यज्ञोपवीत या उपनयन संस्कार का आज भी इतना महत्व है कि जिनका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता उनका विवाह से पहले नाममात्र का यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया जाता है ताकि यह न कहा जा सके कि इनका यह संस्कार नहीं हुआ।

प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार को एक सार्वजनिक संस्कार बनाने का एक मुख्य कारण यह भी था कि हर किसी बालक को मान प्रतिष्ठा रखने के लिए सबके सामने यह प्रकट करना पड़ता था कि उसका बच्चा अब आचार्य के पास विद्याध्ययन करने के लिए जाने लगा है। जो व्यक्ति अपनी सन्तान का यह संस्कार नहीं करता था वह समाज में पतित समझा जाता था। इसी विचारधारा का यह परिणाम था कि सब कोई उपनयन करवाते थे। जो यज्ञोपवीत संस्कार नहीं करवाता था। वह 'सावित्री पतित' कहलाता था।

यज्ञोपवीत को वेदों में परम पवित्र कहा गया है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है:-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यसऽहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

यह ब्रह्मसूत्र अत्यन्त पवित्र है जो पूर्वकाल से चला आता है। प्रजापति के साथ ही आदिकाल से वर्तमान है। यह आयु का देने वाला है, जीवन में आगे ही आगे ले जाने वाला है। यह यज्ञोपवीत निर्मल है जो बल को, तेज को देने वाला है। हे बालक! तू यज्ञोपवीत है तुझे यज्ञोपवीत से अपने समीप लाता हूं।

यज्ञोपवीत आलंकारिक तौर पर आचार्य तथा शिष्य को एक दूसरे के साथ बांधने का प्रतीक है तभी इसे निकट ले जाना वाला कहा।

महर्षि मनु से यज्ञोपवीत का धारण करना अनिवार्य बतलाया है। यज्ञोपवीत को वैदिक संस्कृति के चिह्न के रूप में भी धारण किया जाता है। यज्ञ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए अन्यथा वह यज्ञ करने का अधिकारी नहीं है। ऐतरेय आरण्यक में ऋषि कहता है **''यज्ञोपवीती एवं अधीयीत यजेत याजक्त वा यज्ञसय प्रसृत्यै।''**

वैदिक संस्कृति में तीन प्रकार है-शिखा, सूत्र तथा सन्ध्या। इन तीनों का पालन करना वैदिक संस्कृति में अनिवार्य है तभी वही व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है।

यज्ञोपवीत में तीन सूत्र (धागे) होते हैं जो क्रमशः तीन ऋणों के सूचक है (1) ऋषि ऋण (2) पितृऋण (3) देवऋण। प्रथम ऋण ब्रह्मचर्य धारण कर वेद विद्या के अध्ययन से, द्वितीय ऋण धर्मपूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर सन्तानोत्पति से तथा तृतीय ऋण गृहस्थ का त्याग कर देश सेवा के लिए अपने को तैयार करने से निवृत होते हैं, इसलिए ये तीनों ऋण

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ इन तीनों आश्रमों के सूचक हैं। यही कारण है जब व्यक्ति इन तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है, तीनों आश्रमों को लांघ जाता है तब इस सूत्र के विधान के अनुसार त्याग देता है फिर इसे धारण नहीं करता और सन्यासाश्रम में प्रविष्ट हो जाता है।

यज्ञोपवीत बांये कन्धे पर पहनकर दांये हाथ से नीचे से निकाला जाता है इस प्रकार यह हृदय का भी स्पर्श करता है। किसी भी भार को उठाने के लिए उसे कन्धों पर धारण करना ही कहा जाता है। इस भार को व्यक्ति तभी उठा सकता है जब उसका हृदय स्वीकार कर ले। यज्ञोपवीत यह बतलाता है कि हम अपने आपको कर्तव्य पालने के लिए हृदय से स्वीकार करते हैं।

क्या स्त्रियां भी यज्ञोपवीत पहन सकती है?– कुछ पोंगा पंडितों और तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने यह भ्रान्त धारण फैला दी कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं है। अभी भी कुछ पुरुष छः धागों का यज्ञापवीत पहिनते हैं। ऐसा वे इसीलिए करते हैं कि तीन धागों का तो पुरुष का यज्ञोपवीत और तीन धागों का उसकी पत्नी का। ऐसा वे लोग करते हैं जो अभी भी स्त्रियों के लिए यज्ञोपवीत का विधान नहीं मानते। यह एक भ्रान्त धारण है। पति पत्नी दोनों को ही यज्ञोपवीत पहिनना चाहिए। यह एक शुभ कर्म है, वेद की आज्ञा है, फिर इस वेद की आज्ञा से स्त्रियों को कैसे वन्चित किया जा सकता है। यज्ञोपवीत का सम्बन्ध विद्या से है और विद्या का अधिकार सबको है। मध्यकाल में नारी जाति के यज्ञोपवीत तथा वेदाध्ययन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। यह तो महर्षि दयानन्द की कृपा है कि उन्होंने नारी जाति को पुनः यज्ञोपवीत पहिनने तथा वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया है आज गुरुकुलों में लाखों ब्रह्मचारीणियाँ यज्ञोपवीत धारण करती है तथा वेद भी पढ़ रही हैं। स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उत्तरप्रदेश में ठाकुर विक्रम सिंह जी की ताई का यज्ञोपवीत कराया था।

वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत धारण करने का वैसा ही अधिकार था। जैसा बालकों को। दूसरी बात यह कि वैदिक काल में स्त्रियां वेद शास्त्र पढ़ा करती थी।

गोभिलीय गृह्यसूत्र में लिखा है–**'प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम् अभ्युदाननयत् जपते सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति'।**

अर्थात् कन्या को कपड़ा पहिने हुए, यज्ञोपवीत धारण किए पति के निकट लाये तथा यह मन्त्र पढ़े–**'सोमोऽददत्'**। इस मन्त्र में स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत धारण किए हुए हो। कन्याओं का उपनयन संस्कार होता था।

'ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकायाम्' अर्थात् जिसका शरीर ब्रह्मसूत्र के धारण के कारण पवित्र था। ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत का ही दूसरा नाम है। ब्रह्मसूत्र का अर्थ सूत्रग्रन्थों तथा संस्कृत के कोषों में यज्ञोपवीत किया गया है। इसे ब्रह्मसूत्र, यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत आदि अनेक नामों से स्मरण किया जाता है।

परन्तु खेद की बात है कि मध्यकाल में हमारे पोंगा पंडितों ने वेद के अनर्गल अर्थ बताने शुरु कर दिये। इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि हम अपने मूल सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा भाव करने लगे। इसके अतिरिक्त मुसलमानों के शासन काल में बलपूर्वक वैदिक संस्कृति को नष्ट करने के कुप्रयास भी किए गए। मुस्लिम शासकों ने असंख्य लोगों की चोटियों कटवाई यज्ञोपवीत उतरवाये और कई क्रूर शासकों ने यज्ञोपवीत न उतारने वालों को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार यज्ञोपवीत धारण करने का प्रचलन ध ीरे-धीरे बन्द होने लगा और ब्राह्मणों ने भी यज्ञोपवीत पहिनने का सम्पूर्ण अधिकार अपने पास रख लिया। इतिहास में ऐसा आता है कि शिवाजी महाराज को भी यज्ञोपवीत पहिनाने से ब्राह्मणों ने इन्कार कर दिया और बहुत अधिक दक्षिणा प्राप्त करने पर उन्हें यज्ञोपवीत तो धारण कर दिया गया परन्तु गायत्री का उपदेश उसे फिर भी नहीं दिया गया। परन्तु सौभाग्य की बात है कि आर्य समाज के प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आकर न केवल स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहिनने का अधिकार ही दिलाया बल्कि वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार भी दिया। आज पाश्चात्य सभ्यता के कारण हमारे युवक युवतियां अच्छे संस्कारों से विमुख होते जा रहे रहे हैं। आज वह त्यागपूर्वक भोग करने के स्थान पर भोगवादी प्रवृत्ति को अपना रहे हैं। आज आवश्यकता है नवयुवकों नवयुवतियों में अच्छे संस्कारों की। यज्ञोपवीत संस्कार इनमें एक प्रमुख एवं अति महत्वपूर्ण संस्कार है। अतः विद्या अध्ययन के प्रतीक के रूप में तथा वैदिक संस्कृति के चिह्न रूप में सभी नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

– 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, मो. 09911197073

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

तदनन्तर हनुमान, तार और अंगद सहित सभी वीर वानर सुग्रीव के बतलाये हुये देश की ओर चल पड़े। हनुमान और अन्य वीर वानरों ने सीता को बहुत खोजा लेकिन कहीं भी सीता का पता नहीं लगा। फिर वे सब ढूंढकर थके हुए एकान्त में एक वृक्ष के नीचे बैठे गये और कुछ विश्राम करके दक्षिण दिशा में ढूंढ़ने निकल पड़े। लेकिन वहां भी असफलता पाने पर सभी ने सोचा कि अगर सीता का पता लगाये बिना सुग्रीव के पास जाते हैं तो वह मृत्यु के समान है और सीता की खोज नहीं हुई तो यह भी मरण समान है। दोनों ही प्रकार से हम मृत्यु के समीप हैं। इस प्रकार सोचते हुए सभी वानर श्रेष्ठ हताशा और निराशा को प्राप्त हो गए और उन्होंने खाना पीना भी छोड़ दिया। तभी उसी स्थान पर सम्पाती नाम का बूढ़ा तेजस्वी पुरुष जो श्रीमान गृधराज जटायु का विख्यात भाई और बड़े पौरूष वाला था उनके समीप आया। अंगद ने सम्पाती को पहचानकर हनुमान आदि से परिचय कराया और सम्पाती को अपनी समस्या तथा रामहित में जटायु द्वारा प्राण देने का समाचार भी सम्पाती को बताया। तब सम्पाती उनकी बात सुनकर बोला ''हे वानरों जटायु मेरा छोटा भाई था और उसे रावण ने ही युद्ध में मारा है। मेरे अन्दर तो अब इतनी शक्ति नहीं है लेकिन मैं राम की भले प्रकार सहायता करूंगा। एक रूपवती स्त्री जो हा राम लक्ष्मण पुकार रही थी उसको मैंने रावण द्वारा हरी जाती हुये देखा है। मैं समझता हूं कि वही सीता थी। यहां से सौ योजन दूरी पर दक्षिण दिशा में एक बहुत ही रमणीय लंकापुरी राज्य है। उसी में वह वैदेही वास करती है। इसीलिए वहां जाने का उपाय सोचो।''

सम्पाती द्वारा सीता का पता बताने पर सभी वानर समुन्द्र के किनारे गये और सोच विचार करने लगे कि ऐसे कठिन कार्य को किस द्वारा किया जाएगा। इस विकट स्थिति का देखकर अंगद ने कहा कि ''कौन ऐसा वीर है जो इस सौ योजन लम्बे समुन्द्र को लांघकर इस पृथ्वी पर यश प्राप्त करेगा। अगर आप में से कोई महात्मा समर्थ है तो शीघ्र ही हमको अभय दान दें ''अंगद के वचन सुनने के पश्चात जाम्बवान हनुमान से बोला ''हे वीर शास्त्र जानने वालों में श्रेष्ठ होने के कारण भी आप कैसे चुप बैठे हैं? हे वानर श्रेष्ठ तेरे अन्दर बल, बुद्धि, तेज और साहस सब लोगों से बढ़कर है। आप इस समय सबसे ज्यादा फुर्तीले व पराक्रम वाले हैं। सो हे हनुमान उठ और महासागर से पार हो।''

हनुमान के सहर्ष समुन्द्र पार जाना स्वीकार करने के पश्चात जाम्बवान बोला ''हे केसरी पुत्र, हे वेगवान, पवन के पुत्र तूने बन्धुवर्ग का बड़ा शोक दूर किया है। इसीलिए तेरी अर्थ सिद्धि के लिए हम परमात्मा से प्रार्थना करेंगे कि आप सीता का पता लगाकर सकुशल लौटे। हे वीर सब ऋषि मुनियों का आशीर्वाद भी तेरे लिये है। इसीलिए तु निर्भय होकर इस कार्य को कर।'' इसके पश्चात् महावेगवान, एकाग्र मन वाला, शत्रुओं का हनन करने वाला, उदार मन महानुभाव, हनुमान ने मन से लंका में जाना स्वीकार किया और अपने मन से लंका का ध्यान किया और इसके शीघ्र पश्चात् ही शक्ति से बढ़कर काम करने की इच्छा रखने वाला हनुमान नौका द्वारा समुन्द्र को पार करने लगा। हनुमान जिस गति से नौका चलाकर समुन्द्र पार कर रहा था। तो ऐसा लग रहा था कि समुन्द्र हार मान कर हनुमान के लिए मार्ग छोड़ रहा है। समुन्द्र के परले पार जाकर हनुमान ने अमरावती के तुल्य लंका को देखा और उसमें प्रवेश करने पर विचार करने लगा।

टिप्पणी:- प्रसंगनुसार यहा तीन बातों पर विचार करेंगे। 1. लगभग आप सभी ने श्रीरामानन्द सागर द्वारा बनाई गयी रामायण के सिरियलज को देखा होगा जिसमें जाम्बवान को रीछ का नकाब पहनाकर रिछ (ऋक्ष) दिखाया गया है। जो बोल भी रहा है और युद्ध में युद्ध भी कर रहा है। इसी तरह का वर्णन पढ़ने को भी मिलता है जो सर्वथा असत्य और प्रकृति के नियमों के विरूद्ध है। जाम्बवान अपने समय का अद्वितीय योद्धा था। जो जल, थल

और वायु की सभी विधायें जानता था। रंग काला (जम्बो) और शरीर पर बाल होने के कारण पुराणों में इस महाबली को रीछ बता दिया जो कि गलत है। बाल्मीकि रामायण में जब सब योद्धा निराश होकर अन्न-जल तक छोड़ बैठे थे तो उस समय जाम्बवान ने ही हनुमान को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''मेरी शक्ति घट गई है अर्थात् मैं बड़ी आयु का हो गया हूँ। इस समय आप ही बल, बुद्धि, तेज और पराक्रम में सबसे ज्यादा हो। इसीलिए उस महात्मा राम और सुग्रीव का कार्य करने की क्षमता तुम्हारे अन्दर है। इसमें और प्रमाण देखिये।

जाम्बवान्समुदीक्ष्मेवं हनूमन्तमथाब्रवीत
वीर वानरलोकस्य सर्वशास्त्रविदांवर

(कि.का श्लोक 12 सर्ग 23)

(हे वीर सब शास्त्रों के जानने वाले होकर भी कैसे चुपचाप बैठे हो बोलते क्यों नहीं) ऐसे पारखी, विद्वान, महाबली और पराक्रमशाली योद्धा को रीछ कैसे कह सकते हैं?

2. हमने पीछे गृधराज जटायु के विषय में लिखा था कि वे अपने समय के कुशल विमान चालक और ग्रध देश के राजा थे। जब सब वानर हताश हुये एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे तो उन्हें देखकर सम्पाती आ गया जो महाराज जटायु का बड़ा भाई था। रामायण में सम्पाती का वर्णन इसीलिए आया है कि उसने ही निश्चित तौर पर बताया कि सीता को रावण हर ले गया है। अपने भाई की मृत्यु का बदला भी लेना चाहता है और हर सम्भव सहयोग करने के लिए तैयार भी है। तो इस तरह कि सोच, सामर्थ्य, बुद्धि और बल वाला एक पक्षी नहीं हो सकता।

3. जिस महान व्यक्ति के विषय में हम पहले भी बहुत कुछ लिख चुके हैं और यहां भी सीता की खोज के लिए इस कठिन कार्य के लिए हनुमान का चयन किया गया। हनुमान का इस कार्य को करने के लिए तैयार होने पर वह वीर वानरों के मध्य से उठ हर्षित हुआ सब वृद्धों को अभिवादन करके बोला कि हे वानरों! तुम प्रसन्न हो जावो मैं बुद्धि पूर्वक निश्चय जानता हूँ और मेरे मन की चेष्टा भी ऐसी ही है कि मैं वैदेही को अवश्य देखूंगा। (कि. 24 सर्ग 4,5 श्लोक)

अब आप स्वयं बुद्धिपूर्वक विचार करिये कि एक बन्दर कैसे अभिवादन, वृद्धों का सम्मान व मन की चेष्टा इत्यादि सम्बन्धी बातें कर सकता है? इन बातों से हमारे महापुरुषों का अपमान होता है। आपकी सेवा में मैथिलीशरण गुप्त जी की दो पंक्तियां लिख रहा हूँ। इन्हें आप ध्यान से पढ़ना अवश्य लाभ होगा।

प्राचीन हो या कि नवीन छोड़ा रूढ़ियां हो बुरी।
बनकर विवेकी तुम दिखाओ हंस जैसी चातुरी॥

जहां तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस का प्रश्न है, यहां भी उन्होंने वही पुराना राग अलपाया है देखियें

हनुमत जन्म सुफल करि माना चलेऊ हृदय धरि कृपा निधाना।

जद्यपि प्रभु जानत सब बाता राजनोति राखत सुरत्राता॥

अर्थात् हनुमान ने अपने जन्म को सफल समझा और अपने चित में ईश्वर का ध्यान करते हुए चल पड़ा। यद्यपि परमपिता सर्वज्ञ हैं लेकिन लोक मर्यादा अर्थात् राजनीति करने के लिए यह सब कुछ कर रहे थे। परमपिता सर्वज्ञ है यहां तक तो ठीक लिखा लेकिन श्री रामचन्द्र जी को सर्वज्ञ बता दिया जबकि देहधारी जीव अल्पज्ञ होता है।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

कृमि रोग लक्षण व निदान

- डॉ. अरूणा कुमार पाण्डेय

कृमि रोग के लक्षणः

- पेट में कीड़े होने से मलद्वार तथा नाक में खुजली होती है तथा जी मिचलाता है। पेट में हल्का-हल्का दर्द होता है। भूख बहुत कम लगती है। खून की कमी के कारण कमजोरी हो जाती है। कब्ज, पतले-सफेद दस्त, नींद में पेशाब निकल जाना, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आदि लक्षण दिखाई देते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है तो कोई विशेष अंग कांपने लगता है या मिर्गी के दौरे पड़ने लगते हैं।
- चुन्ने होने पर गुदा में खुजली होती है। बालक दांत किट किटाता है, नाक कुरेदता है तथा बेचैनी अनुभव करता है। केचुए के कारण पेट का फूलना, आमाशय में चुभन, पित्ती उछलना, चर्म पर ददोड़े निकलना, दांत पीसना, सांस लेने में कठिनाई तथा दस्त आदि लक्षण दिखाई देते हैं। कीड़ो के प्रभाव से जिगर का फोड़ा, पीलिया तथा आमाशय की सूजन भी हो सकती है।

उदर कृमि से बच्चों को कैसे बचाएं:

- शौच के बाद अच्छी तरह से साबुन या राख से हाथ धोने के लिए बच्चों को प्रेरित करें और स्वयं भी हाथों की सफाई पर ध्यान दें।
- फलों और सब्जियों को बिना धोऐ न खाएं। बच्चों को इसके लिए शिक्षित करें।
- कब्ज भी रोगों की जड़ है क्योंकि पेट की सफाई न होने पर मल पेट में सड़ता है, जिससे कीड़े पैदा हो जाते हैं।
- बच्चे गंदी जगह पर खेलते हैं, नंगे पैर घूमते हैं, जो चीज मिली से मुंह में डालते हैं, जिससे उनके पेट में कीड़े पैदा हो जाते हैं। उन्हें शिक्षित करें और उनकी गतिविधियों पर नजर रखें।
- बच्चों के नाखुन और अपने नाखून हमेशा काटते रहें और बच्चों के नाखून गुनगुने साबुन मिले पानी से दिन में एक बार अवश्य धोएं। इससे उनके नाखूनों में मैल या कीटाणु नहीं पलते हैं।

बच्चों के लिए घरेलू उपचारः

- नारियल पानी पीकर कच्चा नारियल खाने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।
- 15-20 दिन तक लगातार मूली का रस 20-25 ग्राम पीने से भी कीड़े निकल जाते हैं।
- टमाटर खाने से भी राहत मिलती है।
- अंगूर के रस में नमक डालकर पीने से भी लाभ मिलता है।
- अखरोट की छाल का काढ़ा पीने से भी लाभ मिलता है।
- करेले के रस में समान मात्रा में नीम का रस मिलाकर उसमें थोड़ा सा वाय बिडंग चूर्ण मिलाकर पीने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।
- कच्चे पपीते का एक चम्मच रस पीने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।
- नीम की पत्तियों के रस में शहद मिलाकर चाटने से भी कीड़े मर जाते हैं।
- कीड़ों से छुटकारा पाने के लिए थोड़ा-सा गुड़ खाकर रात को अजवायन फांक लें। कीड़े मल के साथ बाहर निकल जाते हैं।
- संतरे के छिलके लेकर उसमें थोड़ी-सी हींग और सेंधा नमक मिलाकर उबालकर रात को कुछ दिन लेने से कीड़ों से मिल जाती है।
- बच्चों को फास्ट फूड, जंक फूड और कोल्ड ड्रिंक न दें और वे जिद करें तो उसकी हानि के बारे में उनको बताएं।

बड़ों के लिए घरेलू उपचारः

- रात में एक चम्मच ईसबगोल की भूसी पानी के साथ लें।
- इन्द्र जौ का चूर्ण 3 माशे की मात्रा में दिन में तीन-चार बार लें।
- बेलगिरी, इन्द्रजौ, हरड़, सौफ, जीरा, धनिया और सेंधा नमक सभी बराबर की मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें। एक चम्मच चूर्ण रात को पानी या शहद के साथ लें।
- 4-4 रत्ती कच्चे आम की गुठली का चूर्ण दही या पानी के साथ सुबह-शाम सेवन करें।
- चम्पा के फूलों का रस आधा चम्मच की मात्रा

में शहद में मिलाकर चाटें।

- ❑ पलाश के बीज तथा बायबिडंग दोनों 10-10 ग्रा. लेकर चूर्ण बना लें। 3 ग्राम चूर्ण नींबू के रस में डालकर सेवन करें।
- ❑ 3-6 ग्रा. कमीला का सेवन गुड़ के साथ करें।
- ❑ बच्चों को गोल कृमि होने पर आधा चम्मच पान के रस में शक्कर मिलाकर दें।
- ❑ लहसुन की एक छोटी पूर्वी तथा गुड़ 5 ग्रा. दोनों का पीसकर दिन में दो बार दें।
- ❑ नारंगी के सूखे छिलकों का चूर्ण तथा बायबिडंग दोनों को बराबर की मात्रा में पीस लें। उसमें से आधा चम्मच चूर्ण खाली पेट गरम पानी से लें।
- ❑ बायबिडंग तथा सहिजन दोनों के काढ़े में शहद मिलाकर सेवन करें।
- ❑ एक चम्मच नीम के पत्तों के खरस में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटें।
- ❑ आधा चम्मच ढाक के पत्तों का रस शहद में मिलाकर चाटें।
- ❑ बासी पानी में 6 माशा खुरासानी आजवायन का चूर्ण मिला लें। अब उसमें जरा-सा गुड़ मिलाकर पी जाएं।
- ❑ सरंड का तेल या इसके पत्तों का रस बालक की गुदा में चार-पांच बार लगाएं।
- ❑ प्याज के रस में जरा-सा सेंधा नमक डालकर आधे चम्मच की मात्रा में नित्य चार बार पिएं।
- ❑ सत्यानाशी की जड़, बायबिडंग, काला नमक, खुरासानी आजवायन तथा हींग सभी दवाएं पीस डालें। इसमें से आधा चम्मच दवा का सेवन करें।
- ❑ जैतून का तेल गुदा में नित्य सात-आठ बार लगाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं और मल के साथ निकल जाते हैं।

प्राकृतिक उपचार:

- ❑ एनिमा लेने से पेट के कीड़े मल के साथ बाहर निकल जाते हैं।
- ❑ गुदा पर गीली मिट्टी का फाहा बनाकर रखें।
- ❑ पिचकारी द्वारा गुदा के भीतर अमृत धारा युक्त पानी छोड़ें।
- ❑ पेट पर हल्के गरम पानी की धार 10 मिनट तक डालें।

भोजन चिकित्सा:

- ❑ खीरा, कच्चे फल, ककड़ी, कच्चे-पक्के अमरूद, आलू, मांस, चीनी, खटाई आदि न लें।
- ❑ नारियल का पानी दिनभर में चार बार पिलाएं।
- ❑ तीखे, कसैले तथा कड़वे पदार्थ खाने के लिए बार-बार दें।
- ❑ पुदीना, अदरक, जीरा तथा काला नमक की चटनी भोजन के साथ खिलाएं।
- ❑ फलों में पका अमरूद, पपीता, पपीते के बीज (पीसकर), चीकू, आलूबुखारा, खूबानी, केला आदि का सेवन बच्चे को कराएं।
- ❑ अखरोट, बादाम, चिलगोजे तथा पका नारियल इस रोग में लाभदायक है।
- ❑ लहसुन को पानी में घोलकर काढ़ा बनाकर पिलाएं।
- ❑ लहसुन तथा गुड़ को सममात्रा में मिलाकर गोली बना लें। बच्चों को 3 ग्रा. व युवाओं को 10 ग्रा की गोली सुबह खाली पेट 3 दिन खिलाने से उदर कृमि नष्ट होकर निकल जाती है।

यौगिक उपचार:

- ❑ पेट में कब्ज रहता हो और कीड़े की शिकायत हो तो योग से बेहतर कब्ज जनित कृमि को जड़ से नष्ट करने में दूसरा कोई भी उपचार नहीं है।
- ❑ बच्चे तो योग-चिकित्सा की मदद नहीं ले सकते हैं लेकिन बड़े इसका पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।
- ❑ पहले कुछ दिन लगातार हल्का नमक डालकर कुंजल करें। फिर सप्ताह में दो या तीन बार कुंजल करें।
- ❑ शंख प्रक्षालन कर लेने से आंतो की पूरी तरह से सफाई हो जाती है। दो दिन घी वाली खिचड़ी खाने तथा आसन करने के बाद दूसरे उपचार शुरु करें। एनिमा के साथ-साथ योग क्रिया भी करें।
- ❑ पेट पर गर्म-ठंडा सेंक चार बार और दिन में एक-दो बार पेट पर ठंडी पट्टी ऊपर गर्म कपड़ा लपेटकर, यदि रोगी कमजोर हो तो 15-20 मिनट तक पांव का गर्म स्नान करें। उसके बाद ताजे पानी से स्नान करें या सिर को ताजे पानी से धोकर पूरे शरीर पर स्पंज करें। इसके बाद आधे घंटे तक पूरा विश्राम करें।

- योगासनों में सूर्य नमस्कार करें। यह एक सम्पूर्ण व्यायाम है। नौकासन, कमर चक्रासन, जानु शिरासन, योग मुद्रा, अर्द्धमत्स्येंद्रासन तथा पवनमुक्तासन का अभ्यास करने से भी समस्या हल होती है। बाद में भुजंगासन, धनुरासन, मकरासन, हलासन व सर्वांगासन भी जोड़ें। इससे कब्ज का बिल्कुल ही विनाश हो जाएगा।
- प्राणायाम का अभ्यास करना भी जरूरी है। जीवनी शक्ति के लिए नियमित रूप से अग्निसार क्रिया, नाड़ीशोधन प्रणायाम बाह्म कुंभक के साथ उड्डियान बंध लगाकर करें। भस्त्रिका प्राणायाम बाएं से दाएं से फिर दोनों नाभिकाओं से करें। इसके साथ ही उदर कृमि नाशक सूर्य भेदी प्राणायाम का भी अभ्यास करें।
- उपचार के बाद या रात को 15-20 मिनट का

- योग सन्देश से साभार

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
68. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

वेद में नारी का अधिकार

–भूषणलाल

आज का युग जागृति का युग है, अधिकारों का युग है, नर-नारी, छात्र, कर्मचारी सभी को अपने-अपने अधिकारों की चिंता है। उन्हें पाने के लिए सभी उन्मत होकर भाग रहे हैं। नारी भी पीछे नहीं रही, वही नारी जो कभी घर की चारदीवारी में बन्द रहकर असूर्यम्पश्या कहलाती थी, आज सभी क्षेत्रों में देदीप्यमान हो रही है, स्कूलों, कॉलेजों, दफ्तरों, दूकानों, प्रदर्शनियों सभी में उसका बोलबाला है। ऊँची-ऊँची डिग्रियां लेकर वह पुरुषों को भी पछाड़ रही है। आओ बहनो, तनिक ईश्वर की अमर वाणी वेद की शरण में चलें और देखें कि वह हमारे अधिकारों के विषय में क्या कहता है। देखिये, अपने भरे-पूरे घर में रहती हुई नारी क्या विचार करती है? अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी। ममेदनु ऋतं पतिः सेहनापा उपाचरेत्। –१०/१५९/२

अर्थात् ऐ नारी, नीचे देख, गम्भीरता से पांव रखकर चल, तेरे अंग किसी को दिखाई न दें। तू ब्रह्म का रूप है। तनिक विचार करें तो ज्ञात होता है कि इस मन्त्र में जहां नारी को श्रेष्ठ ब्रह्म की उपाधि दी है वहां उसके अपने कोमल तथा सुन्दर शरीर पर रोक लगा दी है। आज की तथाकथित, प्रगतिशील मेरी बहनों को कदाचित् यह बात बड़ी दकियानूसी और अपमानजनक लगेगी, पर मैं पूछता हूं कि यदि भगवान् ने तुम्हें सुन्दरता दी है तो क्या उसे संभालकर रखने की शिक्षा देना बुरा है। आज सिनेमाओं, होटलों, बाजारों, प्रदर्शनियों में अपने सौंदर्य को खुलेआम लुटाने वाली नारी क्या अधिक गौरवमयी बन रही है? इस प्रक्रिया से क्या वह पुनः पुरुष की भोग वस्तु बनकर गृहिणी के अपने उच्च पद से पतित नहीं हो रही? समाचार पत्रों में नित्य ही नारी के इस भाव के फलस्वरूप उसकी दुर्दशा की झांकियां दिखाई देती हैं। पुरुष ने आज उसे अपने आनंद का ही नहीं व्यापार का भी साधन मान लिया है। एक नारी जब होटल में अथवा रंगमंच पर अपने शरीर का नग्न प्रदर्शन करती है तो अनेकों लोलुप आंखें उसे निहारती हैं, तालियां बजाती हैं, अट्टहास होते हैं। नारी समझती है कि यह उसका सम्मान है परन्तु इस सम्मान के पीछे के वीभत्स दृश्यों का कदाचित् उन दर्शकों को अनुमान नहीं होता जो आज की नारी को अपने पर से पतित करके पाप घृणा और नाश के गहरे गर्त में गिरा रहे हैं।

वेद की दृष्टि में नारी श्रेष्ठ पत्नी ही नहीं, श्रेष्ठ माता भी है। राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के नागरिक देना भी उसी का कर्तव्य है।

मम पुत्राः शत्रु हणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहसस्मि सञ्जया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥

१.१५९.३

कितना सुन्दर दृश्य है एक गृहस्थ का, जिसकी कल्पना एक वैदिक नारी करती है। वह कहती है कि मेरे पुत्र शत्रु नाशक हों, मेरी बेटियां अपने श्रेष्ठ गुणों से चमकने वाली हों, मेरा पति यशस्वी हो, इसी में मैं विजयिनी हूं। तनिक निहारिये, विचारिये, नारी का गौरवमय अधिकार जो वेद ने इसे दिया है। ऐसे विचारों वाली न केवल घर की शासिका बन सकती है, वरन् राष्ट्र की भी निर्मात्री तथा शासिका है। वेद के इन मन्त्रों में जहां नारी को दासी के पद से उठाकर रानी का पद दिया गया है वहां उसे वेश्या और पतिता होने से भी बचाया है। वेश्या शब्द बड़ा कठोर प्रतीत होता है। परन्तु मैं पूछता हूं कि आज सिनेमाओं में, रेडियो में, टेलीविजन में किसी भी पर पुरुषों को प्रियतम कहने वाली नारी, प्रदर्शनियों में, दुकानों में, किसी भी धन देने वाले पुरुष की ओर प्रेम से निहारने वाली तथा अवसर मिलने पर उसकी अन्य नीच इच्छाओं की पूर्ति करने वाली नारी क्या वेश्या नहीं? सती-साध्वी है? क्या वह भारतीय नारी है?

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

सुखी जीवन बनायें, सूत्र अपनायें

संसार में दु:ख कोई नहीं चाहता परन्तु यह दु:ख सबको मिलता है चाहे कम मिले चाहे अधिक मिले। इसके विपरीत संसार में सुख हर कोई नहीं चाहता। यद्यापि दार्शनिक भाषा में सुख इन्द्रियों का विषय है जो परमानन्द की छाया मात्र हैं। प्राणीमात्र जी भर कर इसे पाना चाहता है। मनुष्य सांसरिक प्राणी है। हमारा इच्छा है कि वह सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए सुखों को प्राप्त करें, जिससे वह शान्ति और आनन्द की ओर आगे बढ़ सके। हमारी वैदिक संस्कृति में सुख के लिए प्रार्थनायें भरी पड़ी हैं आवश्यकता है उसे अपनाने की–

१. मन्त्रों में सुख तथा आत्मकल्याणकारी प्रार्थना है **अहानि शम् भवन्तु नः शंरात्रि प्रतिधीयताम्! शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या शन्न इन्द्रभूषणा वाजसातौ शमिन्द्रामोसा सुविताया शंयोः॥** यजुर्वेद ३६-११

अर्थात् (अहानि शं भवन्तु नः) हे परमेश्वर! आपकी कृपा से हमारे दिन सुखपूर्वक व्यतीत हों। (शं रात्रि प्रतिध ीयताम्) उसी प्रकार से हमारी रात्रियां भी सुखपूर्वक व्यतीत हों। (इन्द्राग्नी भवतामवेभिः शन्न) विद्युत और अग्नी रक्षादि साधन से हमारे लिए सुखकारी होवें। (शन्न इन्द्रावरुण रातहव्या) वायु और जल आवश्यक पदार्थों को हमारे लिए सुखों मे वृद्धि करें (शन्न इन्द्रापूषणा बाजसातौ) आकाशस्थ मेंघ और पृथिवी अन्न धन की प्राप्ति में हमारे लिए सुख शान्ति कारक होवें। (शमिन्द्रा सोमा, सुविताया शंयोः) सूर्य और चन्द्र ऐश्वर्यो के प्रदान करने से रोगों और भयों के निवारण के लिए सुख शान्ति होवें।

इसी प्रकार सन्ध्या का प्रथम मंत्र सुख की कामना से आरम्भ होता है और अन्तिम नमस्कार मंत्र भी सुख तथा आत्मा कल्याण की प्रार्थना के साथ हमारा ब्रह्मयज्ञ पूर्ण होता है। इसलिए सुख चाहने वाले भद्र जनों को परमपिता परमेश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। इससे सुख अवश्य मिलेगा।

महात्मा विदुर जी द्वारा सुख के सम्बन्ध में दिये गए कुछ सूत्र **अर्थागमोनित्यमारोग्यता च। प्रिया च भार्या प्रिय वादिनी च! वश्यस्य पुत्रोर्थकरी च विद्या षड्जीवलोकस्या सुखानि राजन॥** (विदुर प्रजागर)

प्रस्तुत श्लोक में महाभारत कालके महान् विद्वान् महात्मा विदुर जीने छः सूत्र हमारे समाने रखे हैं। सांसारिक जगत् में उस व्यक्ति को हम सुखी समझ सकते हैं जो इन सूत्रों का पालन करता है। उदाहरण के रूप में–

१. **अर्थागमों**- घर-परिवार चलाने के लिए बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के लिए सभी प्रकार की सांसरिक वस्तुओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित मात्रा में अर्थ यानि रुपये पैसों का होना आवश्यक है। अर्ध से सांसारिक पदार्थो की पूर्ति होने से सुख मिलता है।

२. **नित्यमारोग्यता**- सुख का दूसरा सूत्र व्यक्ति का शरीरिक दृष्टि से प्रतिदिन स्वस्थ रहना बहुत अच्छा शुभ लक्षण माना गया है। बीमार व्यक्ति स्वयं भी दुखी रहता है। दूसरों को भी परेशान रखता है। इसलिए बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि पहला सुख निरोगी काया। दूजा सुख घर में ही माया।

तीजा सुख सन्तान हो आज्ञाकरी................।।

३. **प्रिय च भार्या**- घर-परिवार में देवियों का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जिस घर में पत्नी अपने पति को प्रेम करने वाली हो तथा पति भी बदले में, अपनी पत्नी को उस घर की देवी मानकर सम्मान करने वाला हो वह घर स्वर्ग बन जाता है।

४. **प्रियवादिनी**- जिस घर के सदस्यों की वाणी का प्रयोग परस्पर वाले चाल में मधुर प्रिय और हितकारी हो। वह परिवार व्यक्ति और समाज सुखी रहता है।

५. **वश्यस्य पुत्रो**- वे माता-पिता सौभाग्यशाली हैं, सुखी हैं और बड़े ही भाग्यवान हैं जिनकी सन्तानें आज्ञाकारी हैं अनुव्रती हैं। उनकी आशाओं के अनुरूप उत्तम आदर्शो का पालन करने वाले हैं। सन्तान ऐसी न हो जो माता-पिता के विरोधी हों।

६. **अर्थकारी च विद्या**-माता-पिता अपनी उसी सन्तान को लायक अच्छी और सफल मानते हैं जो शिक्षित होने के बाद कुछ अर्थोपार्जन करने लगें। अन्यथा उसे निकम्मा मानकर उसके गृहस्थ जीवन पर भी प्रश्नवाचक चिन्ह लगा देते हैं। महाराज धृष्टाराष्ट्र ने महात्मा विदुर से यह जानने की कोशिश की थी कि संसार में हम किस प्रकार के शुभ लक्षण वाले व्यक्तियों को सुखी मानें? महात्मा विदुर जी ने सामाजिक व्यवहार के आधार पर उक्त छः आधार हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं। जो अत्यन्त व्यवहारिक हैं। **आरोग्यमनृणमविप्रवास : सद्भिर्मनुष्यैः सह संप्रयोगः। स्वप्रत्यया वृतिरभीत वासः षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥**

(विदुर प्रजागर-८३ श्लोक/अध्याय)

महात्मा विदुर जी ने दूसरे श्लोक में भी सुख के छः लक्षण बतलाये हैं जो देशकाल परिस्थिति के अनुसार आज के समय में भी उपयोगी हैं–

१. **अनृणम्**– किसी का ऋण हम पर न हो बच्चा जब संसार में आता है। सुनते हैं उप पर भी माता-पिता का ऋण देव ऋण और ऋषि ऋण ये तीन ऋण आ जाते हैं। इन ऋणों से भी उऋण होने पर ही सन्तान सुखी होते हैं।

जो व्यक्ति किसी का कर्जदार होता है उसकी शान्ति भंग हो जाती है। चिन्ता सताती है। रातों की निद्रा भंग हो जाती है। साहूकारों, जमीदारों, बैंकों के कर्जो से दबे हुए गरीब किसान, मजदूर, सेवादार आये दिन सुखी होकर आत्महत्यायें कर रहे हैं। वह व्यक्ति बहुत सुखी है अगर उस पर किसी का ऋण नहीं है।

२. **अविप्रवास**– जौ व्यक्ति अपनी संस्कृति अपनी भाषा अपने इष्ट मित्रों बन्धु-बान्धवों में सम्मान पूर्वक रहकार अपना जीवन गुजारता है, वह व्यक्ति ज्यादा सुखी है। अपेक्षाकृत जो विदेश में ऐसे वातावरण में रहता है जहां न सम्मान है न प्रीति है और बन्धु-बान्धव हितैषी हन हैं। किसी विद्वान् ने क्या सुन्दर कहा है–

यस्मिन् देशे न सम्मानः न प्रीति न च वान्धवाः।
तम् देशं परिवर्जयेत्....................॥

ऐसे विदेश में रहने से सुख प्राप्त नहीं होता।

३. **सद्‌भिर्मनुष्यैः सह संप्रयोग**– अच्छे सज्जनों की संगति यदि मिल जाये तो सुखों में वृद्धि होती है। अर्थात् सत्संग से सुख मिलता है। कुसंग से निराशा, हताशा और दुःख मिलता है। सत्संग से न जाने कितने लोगों को सुमार्ग मिला जिनका जीवन धन्य हो गया।

४. **स्वप्रत्यया वृत्ति**– अर्थात् जो व्यक्ति अपने व्यवसाय से, कारोबार से, नौकरी से सन्तुष्ट है। उस व्यक्ति का जीवन सुखी है। जो असन्तुष्ट है अपने कार्य से, वृति से स्वभाव से अपने कारोबार से, धन्धे से वह दुखी है क्योंकि सन्तोष सुख का कारण और असन्तोष दुख का कारण है कहा भी है–

गो धन गजधन बाज धन और रत धन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान।।

५. **अभीत वासः**– जो व्यक्ति निर्भीक है। ईश्वर विश्वासी है। निडर होकर रहता है। वह व्यक्ति सुखी है। जो डरपोक है। कायर है। अपने द्वारा किये गये कुकर्मों से भयभीत रहता है। वह सुखी कैसे रह सकता है।

६. **आरोग्यम्**– जिस व्यक्ति ने योग की क्रियाओं से, प्राणायाम से, व्यायाम से, नियम और संयम से अपने शरीर के निरोग, स्वस्थ और सबल बनाया है वह व्यक्ति निश्चय ही सुखी है।

महात्मा विदुर के इन सूत्रो को अपनाने से मानव जीवन को सुख की ओर ले जाया जा सकता है।

आर्यों की प्रार्थना में सभी के सुखी रहने की कामना–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्द दुःख भाग-भवेत्। हे ईश! सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी। सब हो निरोग भगवान। धन-धान्य के भण्डारी।। सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों। दुखिया न कोई होवें सृष्टि में प्राण धारी।। (साभार : आर्य जगत)

प्रवेश प्रारम्भ

आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट बहादुरगढ़ द्वारा संचालित

(गुरुकुल) अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़ फर्रुखनगर गुड़गांव हरियाणा में स्वच्छ वातावरण से ओत प्रेत आधुनिक सुविधाओं से सुजज्जित गुरूकुल प्रारम्भ हो चुका है जिसमें छात्रों को वैदिक शिक्षा व संस्कार के साथ साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करें।

आवश्यकता– **(1)** एक सेवा निवृत्त **मुख्य अध्यापक** जो गुरूकुल में छात्रों की सेवा करना चाहते हैं। भोजन आवास गुरूकुल में ही रहेगा। **(2)** एक अनुभवी **कुशल वार्डनर** (संरक्षक) की छात्रों के लिए आवश्यकता है जो छात्रों को सुबह 4.30 बजे से जगाकर रात्रि 9.00 बजे तक पूरी तरह दिनचर्या चला सके। **(3) एक रसोईया** जो छात्रों के लिए भोजन तैयार कर सके। भोजन, आवास, और उचित वेतन दिया जायेगा।

सम्पर्क करेः– अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़ फर्रुखनगर गुड़गांव हरियाणा मुख्याधिष्ठाता– **स्वामी धर्ममुनि** 9416054195 **आचार्य– राजहंस मैत्रेय** 9813754084, **संरक्षक– वान. ईशमुनि** 9991251275, 9812640989, **विशेष सहयोगी– महात्मा विश्वमुनि** 9416885535, **व्यवस्थापक– विक्रमदेव शास्त्री** 9896578062

कल्पना के प्रदेश में खत्म हो पर्दा प्रथा

- अवधेश कुमार बच्चन

ताज्जुब की बात है कि देश की राजधानी को तीन दिशाओं से घेरे रखकर विकास की नित नई गाथा लिखने वाले हरियाणा में आज भी पर्दा प्रथा है। जिस मिट्टी में पैदा होकर कल्पना चावला, साइना नेहवाल, सुषमा स्वराज, ममता सौदा, मेघना मलिक, सुनील डबास, संतोष यादव, रानी रामपाल सरीखी बेटियां अपनी सुरभि की छटा देश-विदेश में बिखेर रही हों, वहां आज भी पर्दा प्रथा है। जहां बेटियां जीवन के हर क्षेत्र में अपने नाम का डंका बजवाने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं, जीवनयापन के लिए अपने पसीने की नदी बहाने से गुरेज नहीं करती, खेतों में काम करने से लेकर बुग्गी तक चलाने में आगे रहती हैं, अपने माता-पिता को मुखाग्नि देने से लेकर पुरोहिती कार्य जैसे नितांत पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में कूद पड़ी हों, वहां 21वीं सदी में भी पर्दा प्रथा? और यह एक कटु सत्य है कि प्रदेश का एक भी जिला इस कुरीति से वंचित नहीं है।

पर्दा प्रथा समाज की सबसे प्रमुख बुराइयों में से एक है। राष्ट्रपिता भी इसके खिलाफ आवाज उठाते थे। वे स्त्रियों के विकास के लिए इसे बड़ा बाधक मानते थे। समाजशास्त्रियों ने तो इसे नारीत्व का ही अपमान बताया है। हकीकत है कि पर्दा प्रथा के कारण ही महिलाएं चिकित्सक तक को अपनी परेशानी बताने से गुरेज करती हैं। इसके बावजूद कुछ लोग इसे यह कहकर बढ़ावा देते हैं कि बड़े-बुजुर्गो को सम्मान देने के मकसद से पर्दा प्रथा बेहद जरूरी है। शायद यही एकमात्र कारण है कि सार्वजनिक जीवन में आ चुकी महिलाएं भी स्वयं को घूंघट से बाहर नहीं निकाल पाई है। अब इस सत्य को सभी को समझना पड़ेगा कि बड़े-बुजुर्गो का सम्मान पवित्र ह्रदय व शालीन व्यवहार से दिया जाता है। यदि कोई पर्दा कर ही ले परन्तु ह्रदय व व्यवहार में कटुता रखे, तो यह कैसा सम्मान होगा?

प्रशंसा करनी होगी जींद जिले के छाप्पर गांव की सरपंच नीलम का, जिन्होंने पिछले दिनों इस कुरीति का जड़ निर्मूल करने के उद्देश्य से कमर कस अभियान शुरु किया है। वे घर-घर जाकर नुक्कड़ सभा करके सभी महिलाओं को पर्दा प्रथा बंद करने के प्रति जागरूक कर रही हैं। इसका असर यह हुआ है कि गांव की 80 फीसदी महिलाएं उनके साथ कदमताल करने लगी है। वह मानती हैं कि पर्दा प्रथा महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती है। सरपंच नीलम से पहले कैथल जिले के चौशाला गांव की सरपंच सीमा ने भी लगभग डेढ़ साल पहले पर्दा छोड़ो, दुनिया देखो कार्यक्रम चलाकर विकास व आत्मविश्वास की नई इबारत लिखी थी। वह वाकया भी काफी झकझोरने वाला था। रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत डीसी उनके गांव आए तो उन्होंने पर्दा में रहकर ही उन्हें गुलदस्ता भेंट किया था। बाद में उन्होंने इस बुराई को समझा और प्रण कर लिया कि वे इस कुप्रथा का त्याग तो करेंगी ही, इसके उन्मूलन के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। सीमा का कहना था कि महिलाओं के उत्थान में सबसे बड़ी बाधा पर्दा प्रथा है।

बहरहाल, सीमा, नीलम जैसी महिला सरपंचो ने प्रगतिशील सोच के जरिये पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति को मिटाने के लिए जिस जज्बे के साथ अग्रदूत की भूमिका निभा रही हैं इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। वैसे भी आसपान छूने का हौसला रखने वालों को धूप, बारिश या लू के थपेड़ो से क्या डरना? और इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारे प्रदेश की बेटियों आसमान छूने को कमर कसी हुई है।

ईर्ष्यालु

1. ईर्ष्या वह करता है जो बड़ा बनने के कार्य तो नहीं करता, पर बड़ा बनने की चाह रखता है। ईर्ष्या अपने से बराबर वाले, या अपने से छोटे, किसी से होती है-चाहे वह विद्या में छोटा हो, या धन में, या बल बुद्धि में, या खानदान में, या आयु में। जिसे बड़ा कहलाने की चाह न होगी-वह ईर्ष्या के रोग से मुक्त रहेगा।

2. ईर्ष्यालु मनुष्य का प्रेम बनावटी होगा, या स्वार्थ से होगा। सच्चा हार्दिक प्रेम नहीं हो सकता।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- ❑ पप्पु चप्पु से-बिना बीज वाले गुदेदार फल का नाम बताओ।
  चप्पु- केला
  पप्पु-सबसे कड़वा फल बताओ?
  चप्पु-परीक्षा फल
- ❑ प्रिंसीपल चिंटु से आप फेल कैसे हो गये क्या टीचर पढ़ाती नहीं है,
  प्रिंसिपल- तो फिर क्या हुआ।
  चिंटु-सर टीचर जो पढ़ाती थी उसे ब्लैक बोर्ड पर लिखती थी। मैं भी उसे अपनी नोट बुक में लिखता था। बाद में टीचर ब्लैक बोर्ड से अपने लिखे को मिटा देती थी तो मैं भी नोट बुक से उसे मिटा देता था।
- ❑ लड़की मंदिर में भगवान से- हे भगवान पंजाब की राजधानी दिल्ली बना दो तभी पुजारी बोला-बेटी तुम भगवान से ऐसी प्रार्थना क्यों कर रही हो।
  लड़की- क्योंकि मैंने परीक्षा में पंजाब की राजधानी दिल्ली लिख दी है।
- ❑ अध्यापक-सबसे ज्यादा नशा किस चीज में होता है?
  एक बच्चा-किताबो में
  एक बच्चा-किताब खोलते ही नींद सी आ जाती है।
- ❑ एक जापानी यात्री भारत पहुंचा। तो भारतीय मित्र में पहली बार उसे भारतीय शराब पीने के लिए पेश की। जापानी ने पहला घुंट भरा ही था कि अचानक दीवारे लड़खड़ाने लगी। फर्श हिलने लगा।
  जापानी घबराकर-यार शराब तो बहुत तेज है, पहले घुंट ने ही ये हाल कर दिया।
  भारतीय-फिक्र न करो दोस्त इस गड़बड़ की वजह शराब नहीं भूकम्प है।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

अनमोल मोती

1. यदि हर कार्य यह समझ कर किया जाए कि भगवान मेरा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।
2. एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।
3. समस्या स्वरूप नहीं समाधान स्वरूप बनो और बनाओ।
4. यदि आप हिम्मत का पहला कदम आगे बढ़ाएंगे तो परमात्मा की सम्पूर्ण मदद मिल जाएगी।
5. परमात्मा में दृढ़ विश्वास का अर्थ है-निर्भयता।
6. चेहरे की मुस्कराहट और वाणी की मिठास बड़ो-बड़ो को मुग्ध कर देती है।
7. जहां नम्रता से काम निकल जाए, वहां उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।
8. दूसरों को पहुंचाया गया सुख सबसे ज्यादा आनन्द देता है।
9. ईमानदार व सच्चे दिलवाला व्यक्ति स्वयं को सदा हल्का व तनावमुक्त अनुभव करता है।
10. स्वयं का बचाव करने के लिए कभी दूसरों पर दोषा रोपड़ मत करें, क्योंकि समय के पास सत्य को प्रकट करने का अपना तरीका है।
11. आलस्य काम को कठिन और परीश्रम काम को सरल बना देता है।

श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

विचारों के बिना मानवता का अर्थ नहीं: दुग्धाहारी

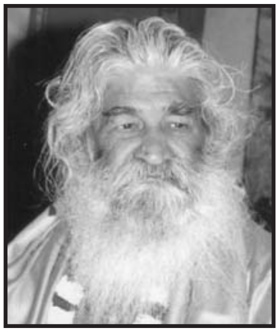

आत्म शुद्धि आश्रम में स्वामी धर्म मुनि दुग्धाहारी ने प्रवचनों में कहा कि सदाचार के बिना मानवता का कोई अर्थ नहीं। सदाचार व मानवता दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए प्रत्येक मानव को सदाचार का पालन करते हुए मानवता का आचरण करना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि सदाचार और मानवता धर्म से ही पोषित होते है और धर्म विहीन मानव की कल्पना हम किस रूप में कर सकते हैं यह कोई कहने की बात नहीं है बल्कि इस बात को भली भांति अनुभव किया जा सकता है। सदाचार को थोपा नहीं जा सकता, क्योंकि सद्गुण मानव में जन्म से ही होते हैं केवल संस्कारों द्वारा इन्हें विकसित किया जाता है। सदाचरण का सीधा संबंध संस्कारों से है। मानवता और सदाचार के आत्मबल का विकास होता है। आत्मीयता और प्रेम भावना का विस्तार होता है, वसुधैव कुटुंबकम की प्रवृति जाग्रत होती है। यह संसार अपना परिवार नजर आता है जो शाश्वत आनन्द का स्रोत है। भौतिकता के चक्कर में आध्यात्मिकता की हम उपेक्षा करते रहते हैं। जिसके दुष्परिणाम हमारे सामने आते रहते हैं। कटुता, स्वार्थपरता, वैरभाव आदि तमाम दुष्प्रवृत्तियां जाने अनजाने हमारे आचरण में आती रहती है। जो हमारे व्यक्तित्व को धूमिल करने साथ ही असामाजिकता को बढ़वा देती है, जो विश्वबंधुत्व की भावना सदाचार का पर्याय है प्रेम जो आत्मा का ही गुण है। भौतिक प्रेम, जिसमें आकर्षण तो बहुत है जिसमें भौतिक सुख भी मिलता है। उसके द्वारा अर्जित धन, कीर्ति मनुष्य को इतना आनंदित कर देती है कि वह इन्हें भवबंधन कारण और दुखदाय समझते हुए भी पूरी उम्र उसके संग्रह में व्यतीत कर देता है और जीवन की वास्तविकता को पाने से वंचित रह जाता है। समय निकल जाने के बाद पछताने के सिवा कोई रास्ता भी नहीं दिखता। समझदारी इसी में है कि हम जीवन को वास्तविकता को पहचानें और सही समय पर यही मार्ग पर सही कदम रखें। उन्होंने कहा कि जिससे अपने कल्याण के साथ-साथ दूसरों के कल्याण का भी माध्यम बन सके। सही अर्थो में तभी हमारा जीवन सफल होगा। भौतिक उन्नति केवल शारीरिक सुख ही पहुंचा सकती है आत्मिक सुख नहीं। इसके लिए केवल सदाचार के मार्ग पर ही हमें चलना चाहिए।

मूल्यवान क्या है?

किसी धनी भक्त ने एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस को एक कीमती दुशाला भेंट किया। स्वामी जी ऐसी वस्तुओं के शौकीन नहीं थे, परन्तु भक्त के आग्रह पर उन्होंने स्वीकार कर लिया। उसे वे प्राय: साधारण कम्बल की भांति बिछा लेते, कभी ओढ़ लेते।

दुशाले का यह दुरुपयोग एक सज्जन को बहुत बुरा लगा। उन्होंने स्वामी जी से कहा, ''यह तो बड़ा मूल्यवान दुशाला है। इसका प्रयोग भी सावधानीपूर्वक करना चाहिए। इस प्रकार तो यह जल्दी ही फट जाएगा।''

परमहंस ने सहजभाव से उत्तर दिया, ''जब सभी प्रकार की ममता छोड़ दी है तो दुशाले से कैसी ममता? क्या आप चाहते हैं कि मैं अपना मन भगवान से हटा कर इस तुच्छ वस्तु की ओर लगाऊँ? किसी छोटी सी वस्तु के लिए एक बहुत बड़ी वस्तु गँवा देना कौन सी बुद्धिमानी है?''

यह कहकर उन्होंने दुशाले के एक कोने को तुरन्त आग से जला दिया और उन सज्जन से कहा, ''लीजिए, अब न तो यह मूल्यवान रहा, न सुन्दर। अब कभी भी मेरे मन से इसे संभालने की चिन्ता पैदा नहीं होगी और मैं सारा ध्यान भगवान की ओर लगा सकूंगा।''

वे सज्जन निरुत्तर होकर वापस चले गए। परमहंस ने भक्तों को समझाया कि सांसारिक वस्तुओं से ममता व मोह जितना कम हो, सुखी जीवन के उतना ही निकट पहुंचा जा सकता है। **-प्रस्तुति कर्ण आर्य**

चक्रव्यूह

– महात्मा ओममुनि

चक्रव्यूह शब्द को जब हम कहीं पढ़ते या सुनते हैं, तब महाभारत युद्ध का एक प्रसंग सामने आ जाता है। बुढ़े बाबा भीष्म पितामह के शर-शैय्या पर लेटने के पश्चात् आचार्य द्रोण कौरव सेना के प्रधान सेनापति बने थे। दुर्योधन के दबाव में आकर उसने युधिष्ठिर को पकड़ने की योजना बनाई। इसी योजना के अन्तर्गत पहले श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध भूमि से दूर किया और फिर चक्रव्यूह की रचना कर डाली। उस समय चक्रव्यूह के भेदन का ज्ञान केवल चार वीरों में, श्रीकृष्ण, अर्जुन, श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न और अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को था। प्रद्युम्न इस युद्ध में आया ही नहीं था। श्रीकृष्ण व अर्जुन को सोची-समझी योजनानुसार पहले ही युद्ध भूमि से दूर कर दिया गया था। अतः उस दिन के युद्ध का भार वीर अभिमन्यु पर आ पड़ा। चक्रव्यूह का भेदन करते हुए वह अकेला ही व्यूह में जा घुसा। अस्त्र-शस्त्र सब समाप्त हो चुके थे। रथ टूट चुका था। निहत्थे वीर अभिमन्यु को सात महारथियों ने घेर लिया और अनीति एवं अन्याय से उस वीर का वध कर डाला।

ब्राह्मण होकर भी द्रोणाचार्य ने जिस अन्याय व अनीति का सहारा लिया, ठीक उसी अवैदिक रीति-नीति का उपयोग द्रोणाचार्य की सन्तानों/ब्राह्मणों ने किया। महाभारत के पश्चात् धीरे-धीरे वेद-शास्त्रों का पठन-पाठन बन्द कर दिया गया और वेद विरूद्ध पौराणिक चक्रव्यूह में भारतीय जनता को फंसा दिया। वेद विद्या के अभाव में देश में अज्ञान व अविद्या फैलती चली गई। लगभग तीन हजार वर्ष से पूर्व चारवाक, बौद्ध व जैन आदि नास्तिक मत प्रारम्भ हुए तत्पश्चात् वैष्णव, शैव, शाक्त व वाममार्गी आदि अनेक पौराणिक मत-मतान्तरों का प्रादुर्भाव हुआ। ऋषि-मुनियों के नाम से वेद-शास्त्रों के विरूद्ध पुराणों, उपपुराणों आदि अनेक ग्रन्थों की रचना कर डाली। रामायण एवं महाभारत आदि ऋतिकृत ग्रन्थों में अपने-2 मतानुसार प्रचुर मात्रा में प्रक्षेप कर दिये गए। ब्राह्मणों ने अपनी भावी सन्तानों की आजीविका सुनिश्चित करने के लिए तीन तरह के उपायों का धर्मभीरु भारतीयों पर उपयोग किया।

प्रथमः- तथाकथित नदियों और सरोवरों आदि को पवित्र तीर्थो के रूप में महिमा मण्डित किया गया और यह प्रसिद्ध कर दिया गया कि इन तीनों के जल में स्नान करने और वहाँ के पण्डे-पुजारियों को दान-दक्षिणा देने पर पिछले सभी पाप-ताप धुल जायेंगे। यहाँ तक अविद्याजन्य भावना भर दी गई कि इन तथाकथित तीर्थो में स्नान करने से मुक्ति तक भी प्राप्त हो सकती है। मृतकों के अवशेषों को इन तीर्थो के जल में विसर्जन करने पर उनकी सद्गति हो जायेगी। कुछ पण्डे-पुजारी इन तीर्थ स्थानों पर आजीविका के लिए स्थापित के लिए स्थापित हो गए। यदि तीर्थो में नहाने से ही मुक्ति होती तो गधे-घोड़े, कुत्ते-बिल्ली आदि सभी की मुक्ति हो जाती और यह आधी से अधिक पृथिवी मनुष्यों से खाली हो जाती।

द्वितीयः- कुछ ब्राह्मण ने गीता आदि ग्रन्थों के कुछ श्लोंको का सहारा लेकर ऐतिहासिक दिव्य महापुरुषों मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, भगवान् श्रीकृष्ण एवं महायोगी भगवान् शिव आदि को ईश्वर का अवतार घोषित कर उनके नाम की मूर्तियाँ बना मन्दिरों में स्थापित कर अपनी दुकानदारी प्रारम्भ कर दी। किसी ने सच ही कहा कि स्वार्थी अन्धा होता है। पहली बात तो यह है कि ये लोग पूजा शब्द का अर्थ ही नहीं जानते, तभी तो अपने आप को पूजारी कहलाते है, अर्थात् पूजा जमा अरी अर्थात् पूजारी (पूजा शब्द का अर्थ होता है आदर-सत्कार व सेवा आदि और अरी का अर्थ है शत्रु/दुश्मन अर्थात् आदर-सत्कार, सेवा आदि शुभकर्मो के दुश्मन। तभी तो दिव्य महापुरुषों के आदर्श चरित्र अपनाने के स्थान पर उनकी मूर्तियाँ खड़ी करके अपनी पेट पूजा का आडंबर खड़ा किया है।

तृतीयः- कुछ ब्राह्मणों ने कर्मकाण्ड के नाम से यज्ञ-हवन, विवाह आदि संस्कार व जन्मपत्री आदि बनाने का ठेका अपने नाम से छुड़वा लिया। सत्य-सनातन वैदिक संस्कारों के स्थान पर नवीन ग्रन्थों से मनमाने ढंग से विवाह आदि संस्कार प्रारम्भ कर दिये। कालसर्प योग, मांगलिक व जड़ ग्रहों के नाम से भोले-भाले लोगों को डराना प्रारम्भ कर दिया। जन्मपत्री के माध्यम से लोगों के खून चूसने का अच्छा-खासा उपाय बना लिया। राशियों के नाम से लोगों को भाग्यवादी एवं रूढ़िवादी बना दिया। जबकि सत्य-सनातन ईश्वरीय

विधान यह है कि जो जैसे कर्म करेगा उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा।

जहां तक सोम, मंगल व बुध आदि ग्रहों के नाम से सात वारों एवं मीन, मेष, वृषभ आदि बारह राशियों की बात है, इन वारों और राशियों का वेदादि किसी भी सत्य शास्त्र में उल्लेख नहीं है। पंचम वेद के नाम से प्रसिद्ध महाभारत जैसे विशाल ग्रन्थ में भी इन्हें कोई स्थान प्राप्त नहीं है। महाभारत के बारे में कहा जाता है कि जो इस ग्रन्थ में है वह दुसरे ग्रन्थों में भी है और जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है। ग्रहों के नाम से वारों और राशियों आदि का वर्णन युनान के मय नामक ज्योतिषाचार्य के सूर्य सिद्धान्त नामक ग्रन्थ में है। इसी ग्रन्थ से लेकर वारों व राशियों आदि का प्रयोग यहाँ के ब्राह्मणों ने भारतीयों को अपने जाल में फंसाये रखने के लिए किया है।

फलित ज्योतिष तथा हस्त रेखा ज्योतिष भी इन्हीं द्वारा तैयार किया पाखण्ड है। इसी पाखण्ड जाल के माध्यम से सारे हिन्दू समाज को दिग्भ्रमित किया हुआ है। यह एक भयंकर मानसिक चक्रव्यूह है जिसमें सारा हिन्दू समाज असहाय और निरीह प्राणी की तरह फंसा हुआ है और उसे इससे मुक्ति का मार्ग दिखाई नहीं दे रहा। मुक्ति का मार्ग तो है किन्तु अज्ञान, अविद्या के कारण उस रास्ते पर चलना ही नहीं चाहते। इस घटाटोप अन्धकार से निकालने के लिए परमदयालु प्रभु ने एक महान् ऋषिको इस भारतभू पर भेजा था, किन्तु स्वार्थ में अन्धे दुष्टलोगों ने बार-बार विषपान कराकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। किन्तु उस महायोगी ने मृत्यु से पूर्व सत्यार्थप्रकाश नामक दिव्यास्त्र आर्यो को प्रदान किया जो सारे पाखण्डों के गढ़ो को ढहाने के लिए प्रयाप्त है। यदि समस्त आर्य/हिन्दु इसके अनुसार चले तो इनका कल्याण ही कल्याण है। यहाँ कुछ वेद मन्त्रों का उल्लेख कर रहें हैं, जिनमें सोम, मंगल, बुद्ध आदि ग्रहों व मीन, मेष, वृषभ आदि राशियों का कोई वर्णन नहीं है, अपितु, ऋषि-मुनियों द्वारा व्यवहार में लाये जाने समय की सभी इकाईयों का वर्णन है।

ओं संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदासत्सरोऽसीद्धत्सरासि वत्सरोऽ। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्तेकल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पनां मासास्ते कल्पन्तामतवस्ते कल्पन्ताँ संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएस्तै सं चाञ्च प्र चं सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाऽङ्गिरस्वदृध्रुवः सीद। यजु. 27/45

भावार्थ- जो आप्त मनुष्य व्यर्थ समय/काल नहीं खोते हैं और सुन्दर नियमों में वर्त्तते हुए कर्त्तव्य कर्मो को करते, छोड़ने योग्यों को छोड़ते हैं उनकी उषा/प्रभात काल, दिन-रात, शुक्ल व कृष्ण पक्ष, चैत्र-बैशाख आदि मास, बसन्त व ग्रीष्मादि ऋतु एवं वर्ष सब सुन्दर प्रकार व्यतीत होते है। इसलिए उत्तम गति के अर्थ प्रयतन कर अच्छे मार्ग से चलकर शुभ गुणों का विस्तार करें। सुन्दर लक्षणों वाली वाणी के सहित धर्म का ग्रहण और अधर्म का त्याग करें।

ओं वसन्त इन्नु रत्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः। वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिविरः इन्नु रन्त्यः॥

सामवेद के इस 616वें मन्त्र में सभी छः ऋतुओं का वर्णन हैं।

ओं द्वादश प्रधश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत। तस्मिन् साकं त्रिशता न शंकवोऽपिर्ताः षष्टिर्न चलाचलासः। ऋग्वेद 1/164/45, अथर्व-10/5/4

अर्थात् एक चक्र है, जिसमें बारह अरे हैं, तीन नाभिस्थान हैं। उस चक्र में साथ ही कीलों की भान्ति तीन सौ साठ चल और अचल अंश/कोण अर्पित हैं। कौन है जो उस एक चक्र के रहस्य को समझता है। इस मन्त्र में सौर वर्ष के बारह मास (मधु-माधव, शुक्र-शुचि, नभस्-नभस्य, ईष-ऊर्ज, सहज्-सहस्य एवं तपस्-तपस्य) और तीन मुख्य ऋतुओं गर्मी, वर्षा और सर्दी, वर्षा और सर्दी तथा पृथिवी एक वर्ष 360 अंश घूमकर सूर्य का एक चक्कर लगाती है, इन्हीं रहस्यों का वर्णन इस वेद मन्त्र में है।

ओं उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोऽहीतोऽसि शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुचये त्वोपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयामगृहीतोऽसि नभस्याय त्वोपयामगृहीताऽसीषे त्वोपयामगृहीतोऽयूर्ज्जे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यूँ, हसस्पतये त्वा।

यजुर्वेद के 7वें अध्याय के 30वें मन्त्र में मधु-माधव आदि बारह सौर मासों का वर्णन है।

सौर मासों और चन्द्र मासों में इस प्रकार की एक

रूप्ता है: मधु/चैत्र, माधव/वैशाख, शुक्र/ज्येष्ठ, शुचि/आषाढ़, नभस्/श्रीवण, नभस्य्/भाद्रपद, ईष/आश्विन, ऊर्ज/कार्तिक, सहस्/मार्गशीर्ष, सहस्य/पौष, तपस्/माघ एवं तपस्य/फाल्गुन मास कहाता है। सौर मास की तिथियाँ निश्चित हैं और सौर मास बदलने को ही संक्रान्ति कहा जाता है। किन्तु चन्द्रमास की तिथियों में घटती-बढ़ती रहती है। ईश्वरीय नियमानुसार सौर मास की प्रथम तिथि के पश्चात् जिस दिन शुक्लपक्ष प्रारम्भ होता है, उसी दिन सम्बन्धित चन्द्रमास प्रारम्भ होता है और और अमावस्या को मास पूर्ण होता है। यही सृष्टि का नियम है। किन्तु यहाँ तो उल्टा हो रहा है। मास को पूर्णिमा के दिन पूर्ण कर दिया जाता है और इससे बहुत पर्व/त्यौहार आदि गलत तिथियों में मनाये जाते हैं।

अथर्ववेद के 16वें काण्ड के 7वें सूक्त के पांच मन्त्रों में 28 नक्षत्रों का वर्णन है, जबकि ये पौराणिक पंडित अपने पंचागों में 27 नक्षत्रों का वर्णन करते हैं।

वेदांग ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा गया है वह केवल इसलिए कि तिथि, नक्षत्र आदि की गणना किए बिना कोई भी यज्ञ आदि कर्म सही 'मुहूर्त' पर नहीं किया जा सकता था। उसके लिए गणित की परम आवश्यकता थी। वैदिक ऋषियों में फलित ज्योतिष की बीमारी बिल्कुल भी नहीं थी। यह लोग फलित ज्योतिष को वेदों का अंग इसलिए कहते हैं ताकि लोगों की आंखों में धूल झोंककर अपना उल्लु सीधाकर सकें अन्यथा इन पौराणिक लोगों ने तो इन्होंने ज्योतिष का दर्शन भी नहीं किया है:

अत: हम सब भारतीयों का यह पावन कर्त्तव्य है कि यवनों से प्राप्त निरयण राशिचक्रों को तिलांजलि देकर शीघ्रातिशीघ्र मधु-माधव, शुक्र-शुचि आदि संक्रान्तियों पर आधारित सौर मास तथा चैत्र, वैशास, ज्येष्ठ व आषाढ़ आदि ऋतु-सम्बद्ध मासों का अनुसरण करके सारे व्रत व पर्व सही दिनों में मनाएं एवं यज्ञादि कर्मकाण्ड करें, क्योंकि सारे वेदादि सत्य शास्त्रों में इन्हीं का वर्णन हैं। प्रत्येक सच्चे भारतीय को इस पौरामणिक चक्रव्यूह से निकल कर पूर्णरूप में स्वतन्त्र एवं सत्य-सनातन वैदिक संस्कृति का पौषक बनना चाहिए।

- वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक, हरियाणा

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

कभी भी पराधीन नहीं रहा है भारत

- प्रो. कुसुमलता केडिया

इतिहास लेखन के कुछ सामान्य नियम हैं। सम्बन्धित समाज के आन्तरिक साक्ष्य ही इतिहास लेखन का मूल आधार बनते हैं। उनके बिना इतिहास का कोई प्रारूप सोचा ही नहीं जा सकता। बहुत दूर से बहुत थोड़े समय के लिए आये हुए नितान्त अजनबी तथा अपरिचित लोगों के चित्त पर पड़ी छाप को उनकी अपनी परिचित शब्दावली में प्रस्तुत करने वाले विवरणों को इतिहास का आधार विश्व में कहीं भी नहीं बनाया जाता है। भारत में कुछ लोगों ने ऐसी अत्यन्त अविश्वसनीय और अप्रामाणिक टिप्पणियों को भारतीय इतिहास का मूल और प्राथमिक स्रोत ही बना डाला है। इसका कारण इस लेखमाला के अन्त में संकेत रूप में दिया जाएगा। सत्ता हस्तांतरण के जरिये जिन लोगों को भारत में सत्ता मिली, वे भारतीय मेधा से अत्यन्त भयभीत लोग हैं, इसलिए वे कभी भी नहीं चाहते कि मेधावी लोग इतिहास लेखन या राजनैतिक चिन्तन या आर्थिक चिन्तन के क्षेत्रों में आगे बढ़े। इन क्षेत्रों में सत्य के सामने आने की सम्भावना मात्र से ये लोग घबराते हैं। यह स्वाभाविक भी है। परन्तु भारत जैसे अद्वितीय और श्रेष्ठ समाज के लिए इस स्थिति में बने रहना अधिक समय तक सम्भव नहीं है। सत्य की जिज्ञासा स्वाभाविक है। सत्य के ऐसे जिज्ञासुओं के लिए इस लेखमाला में इतिहास का सत्य संक्षेप में और सूत्र रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि भारत के मेधावी युवक और युवतियाँ एक बार इस सत्य की झलक पा जाएंगे तो वे इसके सभी पक्षों को बड़े विस्तार से जानने और समझने के लिए उत्सुक हो उठेंगे यह निश्चित है। इसलिए प्रारम्भ में हम इस इतिहास को सार रूप में और सूत्र रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस लेखमाला में भारत के इतिहास का प्रामाणिक लेखन किया जा रहा है जो कि स्वयं भारतीय इतिहास ग्रन्थों तथा ऐतिहासिक साक्ष्यों द्वारा पुष्ट और प्रमाणित है। ऐसा इतिहास 19वीं शताब्दी ईस्वी के अन्तिम चरण और 20वीं शताब्दी ईस्वी के पूर्वार्द्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्री सत्यव्रत सामश्रमी, श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, श्री नन्दलाल दे, श्री रघुनन्दन शर्मा, श्री शिवशंकर काव्यतीर्थ, श्री राजगुरु हेमराज, श्री प्रबोधचन्द्र सेनगुप्त, श्री सीतानाथ प्रधान, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, श्री वि. रंगाचार्य, श्री आठवले, श्री उमेशचन्द्र विद्यारत्न, श्री अविनाशचन्द्र दास, श्री नारायण भवानीराव पावगी, श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य, श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, आचार्य भगवददत्त, श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक आदि विद्वानों ने लिखा है। आधुनिक भारतीय इतिहास के विषय में श्री विनायक दमोदर सावरकर ने बहुत ही कम आयु में अद्वितीय प्रतिभा के साथ उन्हें तब तक प्राप्त साक्ष्यों और स्रोतों के आधार पर लिखा है। परन्तु इन सबके इतिहास लेखन को दबाने के लिए अथवा इनसे बेखबर रहकर अज्ञानियों की एक पूरी पीढ़ी सामने आयी दिखती है जिनके कथनों में कोई भी प्रामाणिक आधार दूर-दूर तक दिखाई नहीं पड़ता।

अतः आगे हम भारतीय साक्ष्यों के आधार पर अधिकारी, विद्वानों द्वारा लिखित भारतीय इतिहास को सार-संक्षेप रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। आधुनिक काल के विषय में हम दानों का विशद अध्ययन सहायक हुआ है। अतः इस काल के विषय में हमारे द्वारा लिखी गयी बातें अन्य विद्वानों से थोड़ी हटकर दिखेंगी। ये बातें किसी भी विद्वान के विरोध में नहीं हैं अपितु अपने अध्ययन और इन दिनों विश्व में सुलभ विस्तृत ज्ञान के कारण अधिक स्पष्टता से आधुनिक कालखण्ड को देखा जा सकता है। तथ्यों की कसौटी पर रचित यह भारतीय इतिहास भारत के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए पठनीय है। इसे पढ़कर वह अपने पूर्वजों के पुरुषार्थ और पराक्रम, बुद्धिबल और आत्मबल तथा अद्वितीय योगदान को भलीभाँति जान सकेगा।

प्राचीन भारत का गौरवशाली इतिहासः प्राचीन भारत के इतिहास का प्रामाणिक वर्णन वाल्मीकि रामायण, महाभारत और पुराणों में है। वह वर्णन इतना विशद और स्पष्ट है कि उसे लेकर व्यापक इतिहास के विषय में कोई भी संशय नहीं रह जाता। विस्तार और ब्यौरों में विविधता और थोड़ी भिन्नता भी स्वाभाविक है। यह ज्ञान से पुष्ट और परिपक्व समाज का सहज लक्षण है।

पुराणों के विस्तृत वर्णनों का प्रासंगिक सार यह है कि दक्ष प्रजापति सर्वप्रथम राजा हुए। यद्यपि एक से अधिक दक्षों का वर्णन भी है। दक्ष के वंश में स्वायम्भुव मनु और शतरूपा आधुनिक कल्प में प्रथम शासक हुए।

उधर वैवस्वत मनु के वंश में सूर्यवंशी शासक हुए। मनु ने ही प्रलय काल के पूर्व भी और पश्चात् भी इस सम्पूर्ण क्षेत्र का भरण-पोषण किया था। इसलिए उनका एक नाम भरत भी हुआ और उनके नाम से ही यह पूरा क्षेत्र 'भारतवर्ष' कहलाया। स्वायम्भुव मनु को भी भरत ही कहते थे और वे ही भारतवर्ष के सर्वप्रथम भरण-पोषणकर्त्ता हैं। इसीलिए भरत के द्वारा शासित क्षेत्र 'भारतवर्ष' है और इसी से प्रेरणा लेकर बाद में भी अनेक तेजस्वी चक्रवर्ती सम्राटों का नाम भरत रखा गया जिनमें आदितीर्थकर ऋषभदेव के पुत्र भरत तथा दुष्यन्तपुत्र सर्वदमन भरत प्रसिद्ध हैं।

मनु के द्वारा रचित व्यवस्था और व्यवहार का शास्त्र मनुस्मृति है जो भारत का प्राचीनतम धर्मशास्त्र है। स्वाभाविक ही है कि इसमें कालक्रम में अनेक प्रक्षेप भी हुए परन्तु विवेक-बुद्धि से उन प्रक्षेपों को सहज ही पहचान जा सकता है।

मनु का उल्लेख तैत्तिरीय संहिता तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में भी है। निरूक्त में और महाभारत में भी उनका उल्लेख एक महान धर्मशास्त्रकार के रूप में हुआ है। वाल्मीकि रामायण में भी भगवान राम बालि-वध को धर्मानुकूल ठहराते हुए प्रमाण के रूप में मनु को ही उद्धत करते हैं। वे श्लोक मनुस्मृति में आज भी यथावत हैं। विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, शंकराचार्य, शबर स्वामी, अश्वघोष, भास, गौतम, वशिष्ठ, आपस्तभ आदि के ग्रन्थों में मनु को ही धर्मशास्त्रज्ञ कहा गया है। इन्हीं मनु से मनुस्मृति की रचना की।

मनु के पुत्र भृगु हुए। उन्होंने भी व्यवहारशास्त्र की रचना की और कालान्तर में उनके द्वारा रचित अनेक श्लोक भी मनुस्मृति में प्रक्षिप्त हो गए। स्पष्ट है कि मनुस्मृति अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है। महर्षि दयानन्द ने मनु को आदिसृष्टि में हुई प्रतिपादित और प्रमाणित किया है क्योंकि स्वयं संहिताओं और ब्राह्मण ग्रन्थों में उनका उल्लेख है। आधुनिक काल में श्री के.एल. दफ्तरी ने स्वयंभू मनु का काल ईसा पर्वू 267 तथा श्री टी.जी. काले ने उनका काल ईसापूर्व 312 माना है, जबकि लोमान्य तिलक ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना ईसापूर्व 4500 में मानते हैं। अत: मनुस्मृति का समय भी तिलक जी की दृष्टि में वही बैठेगा। पुरुषोत्तम वामन काणे ने ब्राह्मण ग्रन्थों का काल ईसापूर्व 4000 से प्रारम्भ माना है। अत: उनके अनुसार भी मनु का समय तिलक से मिलता-जुलता बैठेगा। यह बात अलग है कि बाद के प्रक्षिप्त अंश मनुस्मृति के रचनाकार के विषय में भ्रम पैदा करते हैं। मनुस्मृति में ब्रह्मवर्त, आर्यावर्त और उससे परे के देशों का वर्णन है। तदनुसार ब्रह्मावर्त सरस्वती और दृषद्वती देवनदियों के मध्य है। सरस्वती नदी हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर शिमला, पटियाला, सिरसा से बहती हुई पश्चिमी समुद्र में जाती थी। कालान्तर में वह राजपूताना की मरुभूमि में विलुप्त हो गयी। तब से उसका नाम 'विनशन' प्रसिद्ध हुआ। दृषद्वती भी शिवालिक पहाड़ियों से ही निकलती थी और यमुना के समानान्तर बहती हुई कुरुक्षेत्र के दक्षिण से आगे बढ़कर सरस्वती में मिल जाती थी। ब्रह्मावर्त से लगे हुए सम्पूर्ण क्षेत्र को मनु ने ब्रह्मर्षि देश का नाम दिया है। इसमें कुरुक्षेत्र, मत्स्य (वर्तमान राजस्थान में जयपुर और अलवर तथा भरतपुर का कुछ क्षेत्र), पांचाल (वर्तमान उत्तरप्रदेश के बरेली, बदायूँ और फर्रूखाबाद जिलों के क्षेत्र), शूरसेन (मथुरा और आसपास का क्षेत्र) क्षेत्र आते हैं।

इसके अतिरिक्त मनुस्मृति में मध्य देश का भी वर्णन है जो पश्चिम में सरस्वती की सीमा से पूर्व में प्रयाग और काशी तक है तथा दक्षिण में विन्ध्य पर्वत और उत्तर में हिमालय पर्वत तक है।

इनके साथ ही मनुस्मृति में अन्य जनपदों के भी उल्लेख हैं जिनमें मुख्य हैं-पौण्ड्रक (बांग्लादेश), औड्र (उड़ीसा), किरात (असम), द्रविड़ (तमिलनाडु) पह्लव (पूर्वी ईरान), कम्बोज (अफगानिस्तान का उत्तरी क्षेत्र), दर (गिलगित और हुंजा क्षेत्र), खश (गढ़वाल और उससे उत्तर का हिमालय), यवन (हेला राय), शक और चीन शामिल हैं। संपूर्ण विश्व में वर्तमान चीन 16वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत का ही अंग माना जाता था। अनेक प्राचीन नक्शों से इसकी पुष्टि होती है। शक भारत की ही सूर्यवंशी क्षत्रियों की एक शाखा है जिसका राज भारत से मंगोलिया और रूस तक था। इस प्रकार मनुस्मृति में अखण्ड भारत की सीमाओं का स्पष्ट वर्णन है। इसी सम्पूर्ण क्षेत्र के भरण-पोषणकर्त्ता चक्रवर्ती सम्राट मनु थे। उन्होंने इस सम्पूर्ण क्षेत्र में व्यवस्था के लिए मनुस्मृति रची।

वैवस्वत मनु के पुत्र से सूर्यवंशी क्षत्रियों का वंश चला जिसमें इक्ष्वाकु से भगवान राम तक प्रतापी सम्राट हुए। इसी सूर्यवंश में मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ और उससे चन्द्रवंशी शासकों का वंश चला।

इला का वंश होने से यह वंश ऐल भी कहलाया।

सूर्यवंशियों में इक्ष्वाकु कौशल देश के राजा थे। उनके 5 सुत्र हुए जो उत्तरापथ के अलग-अलग राजवंशों के चलाने वाले हुए। इक्ष्वाकु का पौत्र पुरंजय एक प्रसिद्ध सम्राट हुआ। शक भी सूर्यवंशी क्षत्रियों की ही एक शाखा हैं। वे भारतीय क्षत्रिय ही हैं। शकों का शासन भारत के अनेक क्षेत्रों में तो था ही, पर्थिया, सीथिया, काकिस्तान, चीन और मंगोलिया तथा रोम में भी रहा। बाद में इस सम्पूर्ण क्षेत्र में भारतीय क्षत्रिय जाति हूणों ने शासन किया जो स्वयं भी सूर्यवंश की ही एक शाखा है।

इक्ष्वाकु के ही समय में ऐल वंश के पुरुरवा सम्राट हुए। उनके पुत्र का नाम आयु था। आयु के पुत्र नहुष हुए और नहुष के ययाति हुए। ययाति की दो पत्नियों थीं। एक शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और दूसरी तूरान के महाराजा वृषपर्वा की बेटी शर्मिष्ठा। देवयानी के दो पुत्र हुए-यदु और तुर्वसु। यदु से यादवों का वंश चला, जो भारत में तथा विश्व में भी अनेक देशों में कई हजार वर्षो तक शासक रहे हैं। तुर्वसु के वंशजों ने यवन क्षेत्र से लेकर उत्तर में अनेक देशों में राज किया।

शर्मिष्ठा के तीन बेटे हुए-अनु, द्रह्यु और पुरु। अनु के वंशज आनव कहलाये जो पारसीक क्षेत्र के शासक हुए। द्रह्यु के वंशजों का शासन अफगानिस्तान की सीमा से सटे काम्बोज से लेकर आयरलैण्ड और इंग्लैण्ड तक था तथा भारत के मध्य में भी कई स्थानों पर उन्होंने राज किये। पुरुओं का शासन उत्तरी भारत के सबसे बड़े क्षेत्र में रहा। हस्तिनापुर इनकी राजधानी थी। पुरु वंश में ही विश्व विजयी सम्राट दुष्यन्त हुए और शकुन्तला महारानी से उनके तेजस्वी पुत्र सर्वदमन भरत हुए। ऐलों ने ऐल गणराय बसाया जिसे आज भी 'हेलेनिक रिपब्लिक' कहते हैं। इसे केवल अंग्रेजी में ग्रीस कहा जाता है। वहाँ के लोग स्वयं को यवन तथा हेला ही कहते हैं।

प्रारम्भिक 11 ऋषियों को एकादश प्रजापति कहा जाता है। ऋषि संन्यासी नहीं गृहस्थ होते थे। संन्यास आश्रम का प्रचलन वैदिक युग के बाद ही बढ़ा। भृगु, अंगिरा, अत्रि, मरीचि, पुलस्त्य, पुलह, 'क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, नारद और दक्ष-ये एकादश प्रजापति हैं।

महाभारत में तत्कालीन भारतवर्ष का विशद वर्णन है, जिनमें प्रमुख राज्यों में अभी के प्रसिद्ध राज्यों के साथ ही उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बाह्लीक, परम काम्बोज, काम्बोज, शक, यवन, मत्स्य, खश, उत्तर कुरु, उत्तम मद्र हैं।

उत्तरी भारतीय राज्य हैं- कश्मीर, काम्बोज, दरद, पारद, पारसीक, तुषार, हूण, चीन, ऋचीक, हर हूण।

पूर्वात्तर राज्य हैं- प्राग्ज्योतिष, शोणित, लौहित्य, पुण्ड्र, सुह्म, कीकट। पश्चिमी राज्यों में त्रिगर्त, साल्व, मद्र, सिन्धु, सौवीर, कैकय, गान्धार, शिवि, पह्लव, यौधेय, सारस्वत, आभीर, शूद्र, निषाद हैं। शेष वर्तमान भारतीय राज्य तो हैं ही। स्पष्ट है कि महाभारत काल में चीन, हेला (यवन राज्य), तिब्बत, अफगानिस्थान, ईरान (पारसीक राज्य) आदि सभी भारतीय क्षेत्र थे। इनमें हजारों अत्यन्त तेजस्वी भारतीय राजा हुए हैं। भारत के इस विराट इतिहास को आधुनिक युरोप के समक्ष रखकर देखना और तुलना करना कालप्रवाह का अज्ञान ही है।

वाल्मीकि रामायण में सूर्यवंशी राजा पुरुंजय के पुत्र को महातेज कहा है। इनका पुत्र पृथु हुआ। पृथु के वंश में आगे चलकर युवनाश्व प्रथम और युवनाश्व द्वितीय हुए। उनके पुत्र प्रसिद्ध चक्रवर्ती सम्राट मान्धाता हुए। इनके विषय में भारतीय इतिहास ग्रन्थों में लिखा है कि जहाँ सूर्य उदित होते हैं वहाँ से लेकर जहाँ सूर्य अस्त होते हैं वहाँ तक का सम्पूर्ण भूमण्डल मान्धाता का ही राज्य है।

चन्द्रवंशी ययाति के कुल में यदु के वंश में शशबिन्दु चक्रवर्ती की पुत्री बिन्दुमति मान्धाता को ब्याही गयी थी। इसलिए चन्द्रवंशी क्षत्रियों ने मान्धाता की विश्व विजय में बहुत सहयोग किया। भगवान राम इन्हीं मान्धाता के वंश में हुए। आनवों के वंश ने पंजाब से इजिप्ट मिस्त्र तक शासन किया। इसी वंश में सम्राट पुरंजय और सम्राट उशीनर हुए। उशीनर की पाँच पत्नियाँ थी और पांचों राजर्षियों की पुत्री थी जिनसे पाँच पुत्र हुए जो पंजाब क्षेत्र में अलग-अलग हिस्सों के राजा हुए। इसी वंश में आगे चलकर यौधेय राजा हुए जिनका शासन वर्तमान बहावलपुर के आसपास था। उशीनर के ही वंश में सम्राट शिवि हुए जिनके चार पुत्र हुए, मद्रक, केकय, सुवीर और वृषादर्व। मद्रक ने मद्र जनपद जबकि केकय के केकय जनपद बसाया वहीं सुवीर ने सौवीर जनपद और वृषादर्व ने शिविपुर में ही राज्य किया जो कि वर्तमान शोरकोट (झंग के पास) है।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपुरी, दिल्ली	13100/-
श्री नरेश जी शौकीन सुपुत्र श्री कबुल सिंह जी दिल्ली	11000/-
श्री जगदीप सिंह सुपुत्र श्री रणबीर सिंह पटेल नगर, बहा.	5100/-
श्री विजयपाल सुपुत्र श्री जिलेसिंह	3100/-
श्री आकाश जे.बी.टी. बिल्डर सुभाष विहार, दिल्ली	2100/-
श्री एस.पी. भाटिया दिल्ली	2100/-
बालेश अध्यक्षा आर्य नगर कीर्तन मण्डली बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती सीमा देवी जी पत्नी श्री जितेन्द्र जी चुघ बहादुरगढ़	2100/-
श्री संजय सिंह ओल्हयाण सुपुत्र श्री रामकिशन गढ़ी सांपला	1500/-
श्रीमती कौशल्या देवी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1500/-
श्री भयराम आर्य मार्किट दिल्ली रोहतक रोड़, बहा.	1100/-
श्री सतेन्द्र जी पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री रामनिवास छिल्लर बाल वि. सी. सैक्टर स्कूल बहादुरगढ़	1100/-
श्री चहल परिवार 1269, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रवि कुमार अन्जनि प्रोपर्टीज बहादुरगढ़	1100/-
श्री हर्ष सुखपाल जी डिफेन्स कॉलोनी	1000/-
मेघाली पुत्री बिजेन्द्र शर्मा जी बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-
श्री रोशन लाल जी रोहिणी, दिल्ली	600/-
श्री जयविन्द्र जी दलाल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	501/-
संगत मण्डली, सैक्टर-6 बहादुरगढ़	501/-

टीकरी गांव दिल्ली

श्री गजराज सिंह दराल, राधे कृष्ण एसोसिएट्स	21000/-
श्री धर्मपाल जी सिंडीकेट प्रोपर्टीज	11000/-
स्व. बाला देवी पत्नी श्री मा. करतार सिंह	11000/-
श्री अजीत सिंह सुपुत्र श्री मुन्शीराम जी	5100/-
श्री मामचन्द दराल	3100/-
श्री प्रधान तेजपाल सिंह सुपुत्र श्रीजिले सिंह	3100/-
श्री कार्तिक सुपुत्र श्री रमेश दराल	3100/-
श्री मुकुल दराल सुपुत्र श्री नरेश दराल	3000/-
श्री वीरेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री सरदार सिंह जी	3000/-
श्री मोहित धर्मकांटा	3000/-
श्री प्रदीप दराल सुपुत्र श्री बिजेन्द्र दराल	3000/-
श्री आकाश बॉडी बिल्डर्स	2100/-
श्री संजय सुपुत्र श्री मेहरलाल	2100/-
श्री श्री सुजाता गुप्ता जी, यू.एस.ए.	2000/-
श्रीमती सुरेशा मेहरा जी, यू.एस.ए.	2000/-
श्री पूर्णसिंह जी	2000/-
श्री शिव कुमार	1800/-
श्री अणुरूप सिंह सुपुत्र श्री दरियाव सिंह	1500/-
श्री दयाशंकर जी बाबा जी	1500/-
श्री नरेन्द्र मास्टर सुपुत्र श्री जयसिंह	1500/-
श्री नीलेश सुपुत्र श्री अनिल दराल	1500/-
श्री नरेन्द्र सुपुत्र श्री जगमाल	1500/-
श्री अजीत कुमार सुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह	1500/-
श्री बिरेन्द्र सुपुत्र श्री जिले सिंह	1500/-
श्री विजयपाल सुपुत्र श्री रामपत	1500/-
श्री मदन शर्मा सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी	1500/-
श्री महाशय रामफल आर्य	1500/-
श्री विजयपाल सुपुत्र श्री रामपत	1500/-
श्री प्रियव्रत सुपुत्र श्री दलेल सिंह	1500/-
श्री इन्द्रजी सुपुत्र श्री राजसिंह	1500/-
श्रीमती हरनन्द देवी पत्नी श्री स्वरूपचन्द	1500/-
स्व. पुष्पा चावला मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	1400/-
श्री लवसिंह सुपुत्र श्री लपाड़	1111/-
श्री मा. उमेद सिंह	1100/-
श्री दरियाव धर्मकांटा	1100/-
श्री ऋषि चेयरमैन सुपुत्र श्री दरियाव सिंह	1100/-
श्री सेठ स्व. दीवानचन्द्र जी	1100/-
श्री कृष्ण कुमार सुपुत्र श्री अजीत सिंह	1100/-
श्री राय सिंह सुपुत्र श्री रत्न सिंह जी	1100/-
श्री बिल्लू सुपुत्र श्री जगदीश	1100/-
श्री ईश्वरसिंह सुपुत्र श्री जयसिंह	1000/-
श्री धर्मपाल सुपुत्र श्री सुबे सिंह	1000/-
श्री सत्यवान सुपुत्र श्री मानसिंह	50 किलो गेहूं
श्री बलजीत सिंह सुपुत्र ख्यालीराम	500/- +40 किलो गेहूं
श्री जयसिंह सुपुत्र श्री जयनारायण	50 किलो गेहूं
श्री विजयपाल सुपुत्र श्री जिले सिंह	200, 40 किलो गेहूं
श्री दर्शन सुपुत्र श्री रणजीत	50 किलो
श्री सिंहराम सुपुत्र श्री रोहतास जी	1 बोरी गेहूं
श्री धर्मवीर सुपुत्र श्री भूदेव सिंह	1 बोरी गेहूं
श्री धर्मपाल जी सुपुत्र श्री भूदेव सिंह	50 किलो
श्री सुल्तानसिंह सुपुत्र श्री राजसिंह साहब	2 बोरी गेहूं
श्री सतीश कुमार सुपुत्र श्री देवशर्मा जी	2 बोरी गेहूं
श्री राजेश सुपुत्र प. फुल कुमार	1 बोरी गेहूं
श्री वीर सिंह सुपुत्र श्री रणसिंह नम्बरदार	1100/- रू+1 बोरी गेहूं

श्री महेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री छत्तर सिंह	50 किलो गेहूं
श्री रामनिवास सुपुत्र श्री सुख सिंह	50 किलो गेहूं
श्री करतार सिंह सुपुत्र श्री महासिंह	1 बोरी गेहूं
श्री महेन्द्र सिंह नम्बरदार	80 किलो गेहूं
श्री जितेन्द्र सुपुत्र श्री दलेल सिंह	1 बोरी
श्री सन्तलाल जी	20 किलो गेहूं
श्री ईश्वर सिंह सुपुत्र श्री जीता	1 बोरी गेहूं
श्री सुखवीर	50 किलो गेहूं
श्री रोहतास सुपुत्र श्री रामपत	20 किलो गेहूं
श्री राज सुपुत्र श्री काला	20 किलो गेहूं
भारद्वाज स्वीट सॉप	800/-
श्री उज्जवल (टपु) दलेल सिंह	750/-
श्री अमित सुपुत्र श्री महेन्द्र सिंह जी	750/-
श्री सुरेश सुपुत्र श्री सतबीर	750/-
श्री संजय कुमार सुपुत्र श्री अनुपसिंह	750/-
श्री चन्द्रपाल सुपुत्र श्री मांगेराम	600/-
श्री कबुल सिंह जी आर्य छावला दिल्ली	600/-
श्री आजाद सिंह	502/-
श्री वेद सुपुत्र श्री जिले सिंह	501/-
बाबा हरीदास डेरी	501/-
श्री हरिसिंह जी बवेरवाल	500/-
दीपक मेडिकल स्टोर	500/-
श्री मा. शिवपाल सुपुत्र रतन सिंह आर्य	500/-
श्री बबलू तरूण सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह	500/-
श्री शीशपाल सुपुत्र श्री धर्मसिंह	501/-
मंजीत सुपुत्र श्री जयकिशन	501/-
श्री बिट्टू सुपुत्र श्री देवेन्द्र सिंह	501/-
श्री अजीत सिंह सुपुत्र श्री सुरत सिंह	501/-
श्री सत्यवान जी मलिक	500/-
प. नरेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री रामफल	500/-
श्री हरीपाल सुपुत्र श्री ओमप्रकाश	500/-
श्री सत्यवान जी मलिक	500/-
श्री चरण सिंह सुपुत्र श्री छड़गे	500/-
श्री धर्मपाल सुपुत्र श्री सुल्तान सिंह	500/-
श्री सतेन्द्र जितेन्द्र एवं जयपाल	500/-
श्री प. कृष्ण चन्द्र सुपुत्र श्री उदयसिंह	500/-
श्री ऋषिपाल सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह	500/-
श्री न्यादर पहलवान	500/-
श्री बिजेन्द्र सुपुत्र श्री रामफल	500/-
श्री धर्मसिंह सुपुत्र श्री जागेराम	205/-
श्री बलवीर जी	201/-
श्री रामायण सिंह	200/-
मा. रत्नप्रकाश जी	200/-
श्री कुम्कु सुपुत्र श्री जयकिशन	200/-
श्री जगदीश वर्मा	200/-
श्री चाँद सिंह सुपुत्र श्री महासिंह	200/-
श्री फरखन अली	200/-
श्री चाँदसिंह सुपुत्र श्री महासिंह	200/-
श्री जगदेव सुपुत्र श्री रामकाला	150/-
श्री नफे सिंह	100/-
श्री कपूर टेलर सुपुत्र श्री रामचन्द्र	100/-
श्री अजय कुमार सुपुत्र श्री महासिंह	100/-
श्री सुधीर सिंह	101/-
श्री जयभगवान सुपुत्र श्री धर्मसिंह	100/-
श्री सरेश कुमार सुपुत्र श्री ईश्वर सिंह	100/-
श्री कृष्णा सुपुत्र श्री होशियारे	100/-
श्री संजय	101/-
श्री धर्मवीर सुपुत्र श्री चरण सिंह	100/-
श्री हवासिंह	100/-

विविध वस्तुएं

श्री ओमप्रकाश दहिया विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	60 किलो गेहूं
श्री दयाकिशन जी राठी आठ विशवा बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
ट्रक युनियन परनाला रोड, बहादुरगढ़	4 बोरी गेहूं
श्री मनुदेव जी शास्त्री दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री सतबीर जी राठी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1500/- रूपये
श्री सत्संग मण्डी अनाजमण्डी, बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री प. दयाकिशन जी काठमण्डी बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री शिव ट्रबो ट्रक युनियन बादली रोड, बहादुरगढ़	5 बोरी गेहूं
श्री महीपाल सिंह जी सुपुत्र श्री करतार सिंह राठी बहा.	50 किलो गेहूं
श्री कृष्ण कुमार ठेकेदार बैंक कॉलोनी बहादुरगढ़	25 किलो गेहूं
श्री कंवर सिंह जी राणा सोहटी	2 बोरी गेहूं
श्री राज सिंह जी राणा सोहटी	50 किलो गेहूं
मा. दलबीर सिंह जी आर्य माजरी	650 रूपये
दीपक छिकारा सुपुत्र श्री रूपचन्द्र बैंक कॉलोनी, बहा.	100 किलो गेहूं
श्री जगवीर सिंह देशवाल बहादुरगढ़	कॉपी-54, रजिस्टर -69, पेन-80
श्री भट्ट परिवार द्वारका दिल्ली	आटा 64 किलो, तेल 1 किलो दाल 3 किलो, हल्दी 1 किलो, चीनी 1 किलो
फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कै. फैक्ट्री दिल्ली	200/-+2 पेटी साबुन
श्री मोक्ष दलाल बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
कीर्तन मण्डली आर्यनगर, बहादुरगढ़	गलीचे-2, चावल 5 किलो, चीनी 15 किलो
श्री भूपसिंह डबास शनि मन्दिर,टीकरी	1 टीन सरसो तेल

श्रीमती कमलेश अध्यापिका बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री शुक्ला जी वैनपाल मन्दिर टीकरी दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद अनाजमण्डी	50 किलो चावल

गौशाला हेतु प्राप्त दान

कु. साहिल बंसल सुपुत्र श्री राजेश बन्सल दयानन्द नगर, बहा.	500/-
दर्शना देवी सुपुत्री श्री श्यामलाल दयानन्द बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
श्री बालाजी ट्रेडिंग कम्पनी नॉगलोई दिल्ली	3000/- रूपये
श्री अभिषेक बन्सल सुपुत्र श्री पवन बंसल दयानन्द नगर	500/-
श्री सुदेश जी वर्मा ओमैक्स बहादुरगढ़	500/-
श्री जय प्रकाश चौधरी (सेवानिवृत प्राचार्य) बहादुरगढ़	1100/-
श्री चहल परिवार 1269 सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती निर्मला देवी पत्नी स्व. नत्थुराम जी शर्मा बहादुरगढ़	1000/-
	1 बोरी चूरी
श्रीमती विद्यावती पत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश बहादुरगढ़	5000/-
श्री ईश्वरचन्द हलवाई काठमण्डी बहादुरगढ़	1200/-
श्री विनय महेश्वरी माडल टाऊन बहादुरगढ़	501/-

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती सुभाषनी गुप्ता जी, विकासपुरी न.दि.	12000/-
श्रीमती गांधारकला जी राजपाल पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खंडेवाल विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फरूर्खनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती गांभार कलाजी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभावनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

जनविश्वास का महत्व

- सत्यानन्द आर्य

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियस से एक शिष्य ने प्रश्न किया-'शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकात है?''

दार्शनिक ने उत्तर दिया-''पर्याप्त अन्न, अस्त्र, शस्त्र और जनता का विश्वास प्राप्त करके।''

शिष्य ने पुन: प्रश्न किया-'यदि इन तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़े?''

''अस्त्र-शस्त्र को।'' दार्शनिक ने कहा।

'और यदि शेष दोनों में से किसी का एक का त्याग करना पड़े तब?'

कनफ्यूशियस गंभीर हो गए। फिर बोले-''ऐसी स्थिति में भोजन में अन्न का त्याग करें। अनन्तकाल में मानव-मृत्यु का ग्रास बनता आया है। भोजन के अभाव में कुछ लोग और मरेंगे।''

शिष्य ने पुन: पूछा-''यदि जनता का विश्वास त्याग दें, तो कैसा रहें?''

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया-

''ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जायेगा। कोई भी शासन भोजन और अस्त्र-शस्त्र के अभाव में चल सकता है, किन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर तो एक पल भी शासन नहीं टिक सकता है।''

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स,** 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-**110005, **दूरभाष-**41548503, **चलभाष-**9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **जून** 2014 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो ओ३म् आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

सोमवार 23 जून 2014 से रविवार 29 जून 2014 तक

यज्ञ ब्रह्मा-स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ
योगनिर्देशक-आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
आसन, प्राणायाम प्रशिक्षणः- योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, बहादुरगढ़

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

❑ तनावपूर्ण वातावरण में सुखद व प्रसन्नता पूर्ण जीवन विज्ञान के लिए। ❑ महत्वाकांक्षा रूपी पागल दौड़ से उत्पन्न बैचेनी व अशान्ति की मुक्ति के लिए। ❑ दुःख व सुख के विज्ञान की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जानने हेतु। ❑ पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम व सौहार्द की स्थापना के लिए। ❑ आधुनिक व्यवस्था में स्वातन्त्र्य पूर्ण जीवन के लिए। ❑ मानवीय शत्रु काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि से मुक्ति के लिए। ❑ जगत के प्रति करूणा और आत्मिक सौन्दर्य के विकास के साथ प्रभु से सहज, सरल सम्मिलन के लिए।

प्रवक्ताः डॉ. राजकुमार (जिला शिक्षाधिकारी दिल्ली), **श्री आजाद सिंह** (पूर्व प्राचार्य नेहरू कॉलेज झज्जर), **आर्य तपस्वी सुखदेव जी** (दिल्ली), **आचार्य खुशीराम जी** (दिल्ली), **स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रविशास्त्री** (आश्रम),

भजनोपदेशकः मा. विश्वमुनि जी (आश्रम बाछौद), **श्री धनीराम जी बेधड़क, संगीताचार्य लक्ष्मणानन्द रामानन्द** (नरेला), **पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक** (झज्जर), **योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी**

दिनचर्याः सोमवार 23 जून 2014 को **शिविर उद्घाटन** सायं 4 बजे

मंगलवार 24 जून 2014 प्रातः 5 से 7 बजे तक **ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण** 7:30 बजे से 10 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, 11 बजे से 12:30 बजे तक **योग दर्शन स्वाध्याय, शंका समाधान। मध्यांह्नोपरान्त** 3 बजे से 5 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश,** 5:30 से 7 बजे तक **साधना** रात्रि 8:30 बजे 9:30 बजे तक **शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन**

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजकः वानप्रस्थी ईशमुनि मो. 9812640989।

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी
मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195

श्री सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्टी

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

जून 2014

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

दानदाताओं से निवेदन

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ प. न्यास द्वारा स्थापित शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव में शीघ्र ही भव्य भवनों का निर्माण हो चुका है जिसमें आप अपने निकटतम सम्बन्धी के नाम का पत्थर लगवा कर उनकी स्मृति चिरस्थायी करवा सकते हैं।

1.	अण्डरग्राउन्ड साधना हाल सत्संग भवन 30' x 62'	लागत	21,00,000/-
2.	धर्मार्थ चिकित्सालय, आधुनिक सुविधाओं से सुजज्जित 30' x 43'	लागत	15,00,000/-
3.	भव्य यज्ञशाला (उपासना मन्दिर) 30' x 30'	लागत	11,00,000/-
4.	दो कमरे बरान्डा, किचन, लैटरीन, बाथरूम सहित 12' x 10' एक कमरे की	लागत	2,50,000/-
5.	साधकों के लिए अण्डर ग्राउन्ड 6 कमरे 12' x 9'	लागत	1,00,000/-

आप सभी के पुनीत सहयोग से यह महती कार्य वैदिक संस्कृति प्रचार प्रसार में अग्रसर हो सकेगा और आप भी धार्मिक कार्य के पुण्य के भागी बनेंगे। 5100/- रूपये से अधिक का पवित्र दान देनेवाले का नाम दान दाताओं की स्वर्णिम सूची में अंकित किया जायेगा।

सत्यानन्द आर्य (प्रधान)
मो. 9313923155

दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मंत्री)
मो. 9810033799

स्वामी धर्ममुनि जी
मो. 9416054195

ईशमुनि जी
मो. 9812640989

राजहंस मैत्रेय आचार्य
मो. 9813754084

विक्रमदेव शास्त्री
मो. 9896578062